हिन्दू विश्व

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

वर्ष 21 अंक 10

जून 01-15, 2018

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण - ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

'विरोधकृत' नामक विक्रम सम्वत्

वि. सं. -2075

युगाब्द - 5120

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था - श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. -09582555152

सज्जा - श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152
011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए .....$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति .....10 ₹
वार्षिक .....200 ₹
त्रिवर्षीय.....500 ₹
पंचवर्षीय .....800 ₹
दसवर्षीय.....1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.....2,100 ₹

कुल पेज - 28

आंदोलन से विद्रोह नहीं पनपता बल्कि शांति कायम रहती है।
- वेडेल फिलिप्स

15

११० बजरंगियों ने ली त्रिशूल दीक्षा

विहिप अध्यक्ष ने लिया संतों का आशीर्वाद

18

सम्पादकीय

आतंकियों को लाइफ लाईन ?.....04
शरणार्थी दबाव से कसमसाता यूरोप.....06
तीन चेतन देवता माता, पिता और आचार्य.....07
मुस्लिमों को पढ़ाया जा रहा कम्युनिज्म का पाठ, पिलाई जा रही शराब.....09
समाज के लिए प्रेरणास्रोत : कुशोक बकुला 10
हिन्दू युवती ने लव जिहादी की बजाय पिता को अपनाया!.....11
अवधधाम 84 कोसी परिक्रमा 12
धूमधाम से मनाई गई भगवान गौतम बुद्ध जयंती 13
नगर संकीर्तन यात्रा.....14
विहिप महामंत्री मिलिंद परांडे का नागरिक अभिनन्दन समारोह.....15
एक दूजे के हुए 11 दिव्यांग दम्पति 16
विहिप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष कोकजे जी का जोरदार स्वागत 17
बुद्ध जयन्ती कार्यक्रम में विहिप कार्याध्यक्ष 19
आद्यात्मिक और व्यवहारिक समरसता 20
महाराणा प्रताप जयंती.....21
दानवीरों में श्रेष्ठ भामाशाह.....22
राजस्थान सरकार ने पाक विस्थापितों के लिए बनाई नीति.....25
2019 के शाही स्नान तिथियों की घोषणा.....26

मानवेन्द्र नाथ पंकज

आतंकियों को लाइफ लाइन?

केन्द्र सरकार के महत्वपूर्ण मंत्री ने अपनी पीठ ठोंकी है कि उनके ही आदेश से कश्मीर में रमजान में आतंकियों के खिलाफ आपरेशन नहीं चलाने का आदेश दिया गया है ताकि मुसलमान रमजान शांतिपूर्वक मना सकें। सवाल यह है कि पाक से एकतरफा सीजफायर, पाक सेना पर पहली गोली नहीं चलाने का आदेश, पत्थरबाजों को आम मॉफी, अब आतंकियों के खिलाफ सेना को सर्च आपरेशन नहीं चलाने का आदेश, रमजान मेरा सौभाग्य, मेरे भटके हुए नौजवान की रह–रहकर शोशेबाजी क्यों की जा रही है? क्या यह सुरक्षाबल/जनता के जख्मों पर नमक छिड़कना नहीं है?

कैसी विडम्बना है कि एक तरफ चीन मुसलमानों को रोजा इत्यादि धार्मिक कृत्यों से दूर रखने हेतु जबरदस्ती कर रहा है वहीं भारत में उन्हें प्रशासन व आम जनता को परेशान करने के लिए प्रोत्साहन जैसा दिया जा रहा है। इस पर विचार किया जाना चाहिए कि शांतिपूर्वक रमजान मनाने के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए सेना, सुरक्षाबल या आम जन बलि का बकरा क्यों बनाए जा रहे हैं?

महबूबा के बयान धमकी भरे लगते हैं। बकौल महबूबा, ''घाटी में अस्त–व्यस्त हालात सुधारने के लिए पूर्व पीएम अटलबिहारी वाजपेयी का फार्मूला अपनाया जाना चाहिए, ताकि ईद व अमरनाथ यात्रा शांतिपूर्ण ढंग से हो सके। तो क्या यह संघर्ष विराम अमरनाथ यात्रा तक बढ़ेगा?

जबकि सत्तारूढ़ भाजपा की जम्मू–कश्मीर इकाई का मानना है कि "यह कदम राष्ट्रहित में नहीं है। सेना की कार्रवाई से आतंकवादियों के हौसले चूर–चूर हुए हैं। ऐसे में एकतरफा संघर्षविराम उन पर पड़ने वाले बोझ और खौफ को न सिर्फ कम करेगा, बल्कि उन्हें पुनः आतंकी घटनाओं को अंजाम देने के लिए बेताब करेगा।" ये आशंकाएं सच साबित हुई जब घोषणा के कुछ ही घंटों के भीतर आतंकियों की शोपियां में सेना के एक दल पर गोली चलाकर भाग निकले। लश्कर ने इस संघर्षविराम की पेशकश को ठुकरा दिया।

बता दें कि पाक की तरफ से इस वर्ष अब तक 700 बार युद्ध विराम तोड़ा जा चुका है। सीमा व एलओसी पर लगभग 20 सुरक्षाकर्मियों सहित 35 लोगों को मारा जा चुका है (18 मई)। जम्मू–कश्मीर पुलिस की रिपोर्ट बताती है कि, 'इस साल के शुरूआती 90 दिनों में 30 स्थानीय युवा आतंकी बने थे। लेकिन इसके बाद 45 दिनों में 69 युवा आतंकी संगठन में शामिल हुए। मुठभेड़ में शीर्ष स्तर के आतंकियों के मारे जाने से हिजबुल मुजाहिद्दीन ने हमला करने की क्षमता में काफी कमी आई है, लेकिन युवकों के आतंकी बनने की प्रक्रिया पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

युवाओं के आतंकी बनने के मामले में पुलवामा जिले की स्थिति सबसे ज्यादा भयावह है। इस जिले से ही 24 युवा आतंकी संगठनों में शामिल हो चुके हैं वहीं शोपियां से 10, कुलगाम से तीन व बांदीपुरा व गांदरबल से एक–एक युवा आतंकी

आर्क बिशप की चिट्ठी : मोदी सरकार न बने...

नई दिल्ली : रोमन कैथोलिक के दिल्ली के आर्कबिशप अनिल कुटो द्वारा पादरियों को लिखे गए एक पत्र से नया राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया है। आठ मई को लिखे गए पत्र में उन्होंने वर्तमान राजनीतिक हालात को अशांत करार देते हुए अगले वर्ष होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए दुआ करने की अपील की है।

माना जा रहा है कि परोक्ष रूप से उन्होंने वर्ष 2019 में नरेंद्र मोदी सरकार नहीं बने, इसके लिए लोगों से दुआ करने और उपवास रखने की अपील की है। इस पत्र पर भाजपा ने आपत्ति जताई है। आर्कबिशप अनिल कुटो ने यह पत्र देश के पादरियों के लिए जारी किया है। जिसमें ईसाई समुदाय से नरेन्द्र मोदी की सरकार दोबारा न बनने के लिए दुआ करने का आह्वान किया है। बिशप ने भारत की मौजूदा राजनीतिक स्थिति को 'अशांत' करार दिया है।

आर्क बिशप अनिल ने लिखा है कि 'हम लोग अशांत राजनीतिक माहौल का गवाह बन रहे हैं। इसके कारण संविधान में उल्लिखित लोकतांत्रिक सिद्धांतों और देश के धर्मनिरपेक्ष ताने–बाने के लिए खतरा पैदा हो गया है। देश और राजनेताओं के लिए प्रार्थना करना हमारी पवित्र परंपरा है। आम चुनावों के समीप आने के कारण यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। उन्होंने ईसाई समुदाय के लोगों से अगले साल होने वाले लोकसभा चुनावों के लिए प्रार्थना के साथ ही हर शुक्रवार को उपवास करने की भी अपील की है, ताकि देश में शाँति, लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता और भाईचारा बरकरार रहे।

13 मई को मदर मरियम ने दर्शन दिए थे, इसलिए यह महीना ईसाई धर्म के लिए विशेष महत्व रखता है। आर्क बिशप ने इस पत्र को चर्च में आयोजित होने वाली प्रार्थना सभा में पढ़ने को भी कहा है, जिससे लोगों तक यह जानकारी पहुंच सके।

(पंजाब केसरी, 22 मई)

आर्कबिशप का बयान; भारत की धर्मनिरपेक्षता पर हमला

वडोदरा। विश्व हिंदू परिषद ने एक पत्र में देश में 'अशांत राजनीतिक माहौल' से उपजने वाले खतरे को लेकर आगाह करने पर दिल्ली के आर्कबिशप की आलोचना करते हुए इसे 'भारत की धर्मनिरपेक्षता पर चर्च का सीधा हमला' करार दिया है। विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष आलोक कुमार ने आरोप लगाया कि यह वेटिकन (रोमन कैथलिक चर्च का मुख्यालय) का सीधा हस्तक्षेप और धर्म के आधार पर भारत को बांटने की उन्होंने कहा , 'यह भारत की धर्मनिरपेक्षता एवं लोकतंत्र पर चर्च का सीधा हमला है ... यह वेटिकन का सीधा हस्तक्षेप है क्योंकि इन बिशप को पोप नियुक्त करते हैं। उनकी जवाबदेही भारत के प्रति नहीं बल्कि पोप के प्रति है। ' कुमार पिछले महीने पद के लिए चुने जाने के बाद शहर की अपनी पहली यात्रा के दौरान संवाददाताओं से बात कर रहे थे।

विहिप नेता ने पत्र को लेकर प्रतिक्रिया देते हुए कहा, 'देश के धर्मनिरपेक्ष ताने–बाने एवं एकता का क्या होगा, अगर मुसलमान , हिंदू और दूसरे धर्मों का प्रतिनिधित्व करने वाले इस तरह के पत्र लिखने शुरू कर दें?' (भाषा, 22 मई)

संगठनों में शामिल हो चुके हैं।

''द हिन्दू'' के अनुसार 1 अप्रैल को सैन्य अभियान में 13 स्थानीय आतंकियों की मौत हो गई थी। इसके बाद हालात और भी खराब हो गए। पुलिस रिपोर्ट का कहना है कि 35 युवा तो 1 अप्रैल के अभियान के तुरंत बाद ही आतंकी संगठन में शामिल हो गए थे। (देखें सरकार ने रोका अभियान, पर दोगुना बढे..... जनसत्ता आनलाइन, 17 मई, 2018)

शोपियां में स्कूली बच्चों की बसों पर पथराव व 7 मई को पथराव से चेन्नई के एक पर्यटक की मौत के बाद उम्मीद की जा रही थी, केन्द्र व राज्य सरकार आतंकवादियों व उनकी सप्लाई लाईन विशेषतः पत्थरबाजों पर निर्णायक प्रहार हेतु कमर कसेगी, परन्तु ऐसा लगता है कि महबूबा की कुटिल चालों से वशीभूत केन्द्र सरकार आतंकवादियों को लाइफ लाईन दे रही है!

पाक गोलाबारी में बीएसएफ जवान–नागरिकों सहित 8 माह के दुधमुँहे शिशु की मौत व आतंकियों तथा पत्थरबाजों के हमले में सेना के जवानों के घायल होने/शहीद होने के लिए क्या महबूबा जिम्मेवार नहीं हैं? सेना–सुरक्षाबलों को आतंकियों–उनके पृष्ठपोषकों तथा पाक सेना के सम्मुख हतबल कर खड़ा करने वालों के विरुद्ध जनमत बनाना समय की मांग है।

(23 मई)

शरणार्थी दबाव से कसमसाता यूरोप

अशोक कुमार

यूरोप में 2015 के शरणार्थी संकट के बाद मुसलमानों की संख्या अचानक बढ़ गई है। दस लाख से ज्यादा मुसलमान अचानक जर्मन समाज का हिस्सा बन गए। पहनावे और रहन–सहन के साथ–साथ मस्जिदों से अजान दिए जाने पर भी सवाल उठ रहे हैं। मुसलमानों के लिए जहां मस्जिद से आने वाली अजान की आवाज रोजमर्रा की दिनचर्या का हिस्सा है, वहीं यूरोप में रहने वाले बहुत से लोग उसे सिर्फ लाउडस्पीकर से होने वाला शोर समझते हैं जिससे उनकी नींद, आराम और सुकून में खलल पड़ती है। कई और यूरोपीय देश भी अपने समाज में आने वाले ऐसे बदलाव और टकराव से गुजर रहे हैं।

पिछले दिनों **स्वीडन** के एक शहर वेक्सयो में स्थानीय लोगों के विरोध के बावजूद पुलिस ने एक मस्जिद को जुमे की नमाज के लिए अजान लगाने की अनुमति दे दी। आम चुनाव से ठीक पांच महीने पहले वहां यह फैसला राष्ट्रीय बहस का मुद्दा बन गया। कई राजनेता पुलिस के फैसले पर सवाल उठाते हुए कह रहे हैं कि इससे समाज में सांस्कृतिक तनाव बढ़ेगा। हालांकि मस्जिद के इमाम का कहना है कि अजान को ठीक वैसे ही समझा जाना चाहिए जैसे चर्च की घंटियां। लेकिन स्वीडन में हुए एक सर्वे में 60 प्रतिशत लोगों ने कहा कि मस्जिदों से होने वाली अजान पर बैन लगना चाहिए। वेक्सयो में पुलिस ने हफ्ते में सिर्फ एक दिन और वह भी तीन मिनट 45 सेकंड के लिए अजान लगाने की अनुमति दी है। लेकिन आलोचकों का कहना है कि आसपास रहने वाले लोग अपने घरों में इतनी देर भी क्यों अजान सुनें। वेक्सयो की मस्जिद स्वीडन की तीसरी ऐसी मस्जिद है जिसे अजान की अनुमति मिली है।

इससे पहले, **पश्चिमी जर्मनी** में ओएर एरकेशविक शहर में एक ईसाई दंपति स्थानीय मस्जिद से होने वाली साप्ताहिक अजान को रुकवाने में कामयाब रहा। मस्जिद से छह सौ मीटर की दूरी पर रहने वाले इस दंपत्ति ने अदालत में दलील दी कि अजान की आवाज से उनके धार्मिक अधिकारों का हनन होता है।

उन्होंने कहा, "अजान से होने वाले शोर से ज्यादा हम इस बात को लेकर चिंतित है कि इसमें अल्लाह को हमारे ईसाइयों के ईश्वर से ऊपर रखा गया है। यहां ईसाई माहौल में पले बढ़े किसी भी ईसाई के लिए यह स्वीकार्य नहीं होगा।" अदालत ने धार्मिक मुद्दे पर तो कोई टिप्पणी नहीं की लेकिन मस्जिद से अजान की अनुमति देने की प्रक्रिया में खामियों का हवाला देते हुए इस पर रोक लगा दी।

नॉर्वे में भी ऐसी ही रोक की मांग उठ रही है। सत्ताधारी गठबंधन में शामिल प्रोग्रेस पार्टी इस मांग को उठा रही है। नॉर्वे में अभी कोई भी मस्जिद अजान नहीं देती है। लेकिन प्रोग्रेसिव पार्टी का दावा है कि स्वीडन की देखा–देखी कुछ मस्जिदें इसके लिए अनुमति लेने की तैयारी कर रही हैं। आप्रवासियों का विरोध करने वाली प्रोग्रेस पार्टी ने 2000 में भी अजान पर प्रतिबंध का प्रस्ताव दिया था। लेकिन देश के न्याय मंत्रालय ने उसे यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि इस तरह का कोई भी प्रतिबंध यूरोपीय मानवाधिकार कन्वेंशन का उल्लंघन होगा, जो विचारों, चेतना और धर्म की आजादी का अधिकार देता है।

यूरोप दुनिया भर में अपने मानवीय मूल्यों और मानवाधिकारों के लिए जाना जाता है। ऐसे में, यूरोप में रहने वाले किसी भी व्यक्ति को अपने धार्मिक रीति रिवाजों पर चलने से नहीं रोका जा सकता। लेकिन अगर यूरोप में रहने वाला कोई व्यक्ति किसी महिला से यह कहते हए हाथ मिलाने से इनकार कर दे कि उसके धर्म में गैर औरतों को छूने की मनाही है तो आप कैसी प्रतिक्रिया की उम्मीद करेंगे। या फिर स्कूल में कोई व्यक्ति अपनी छोटी छोटी बेटियों को इसलिए तैराकी सीखने ना भेजे कि उन्हें वहां अपनी क्लास के लड़कों के साथ तैरना होगा। दोनों ही मामले **स्विट्जरलैंड** के हैं और दोनों में ही आखिरी फैसला स्थानीय नियम कायदों के मुताबिक किया गया। यानी पहले मामले में दो मुस्लिम छात्रों को अपनी टीचर से हाथ मिलाने का आदेश दिया गया तो दूसरे फैसले में लड़कियों को लड़कों से साथ ही तैराकी सीखने को कहा गया।

उन्होंने कहा, ''अजान से होने वाले शोर से ज्यादा हम इस बात को लेकर चिंतित है कि इसमें अल्लाह को हमारे ईसाइयों के ईश्वर से ऊपर रखा गया है। यहां ईसाई माहौल में पले बढ़े किसी भी ईसाई के लिए यह स्वीकार्य नहीं होगा।''

जाहिर है नए लाइफस्टाइल को एकदम से अपना लेना ना तो यूरोप में आ रहे मुसलमानों के लिए आसान है और ना यूरोपीय लोग उनके तौर तरीकों को रातों रात स्वीकार कर लेंगे। किसी भी समाज में अचानक होने वाले बदलाव सहज नहीं होते। कई बार ऐसे बदलाव टकराव में भी तब्दील होने लगते हैं। यूरोप में बुर्के, अजान या फिर मस्जिद बनाने को लेकर होने वाले विवाद इसी टकराव का हिस्सा हैं।

अमेरिकी थिंकटैंक पियु रिसर्च सेंटर का अनुमान है कि 2050 तक यूरोप की आबादी में 7.5 फीसदी मुसलमान होंगे। इस समय यूरोप में सबसे ज्यादा मुसलमान फ्रांस में रहते हैं जहां उनकी आबादी 57.2 लाख है। इसके बाद जर्मनी (49.5 लाख), ब्रिटेन (41.3 लाख), इटली (28.7 लाख) और नीदरलैंड्स (12.1 लाख) यूरोप में सबसे ज्यादा मुस्लिम

शेष पृष्ठ 17 पर.....

अत: सन्तान का यह कर्तव्य होता है कि वह बड़ी होकर माता को सब सुख सुविधायें प्रदान करें और उन्हें मानसिक, शारीरिक व अन्य किसी प्रकार की असुविधा व दु:ख न होने दे। सन्तानों का कल्याण करने और अनेक कष्ट व दु:ख सहन करने के कारण माता अपनी सभी सन्तानों के लिए पूजनीय देवता होती है।

तीन चेतन देवता माता, पिता और आचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

वेदों में देव और देवता शब्द का प्रयोग हुआ है। देव दिव्य गुणों से युक्त मनुष्यों व जड पदार्थों को कहते हैं। परमात्मा अर्थात् ईश्वर परमदेव कहलाता है। देव शब्द से ही देवता शब्द बना है। देवता का अर्थ होता है जिसके पास कोई दिव्य गुण हो और वह उसे दूसरों को दान करे। दान का अर्थ भी बिना किसी अपेक्षा व स्वार्थ के दूसरों को दिव्य पदार्थों को प्रदान करना होता है। हम इस लेख में चेतन देवताओं की बात कर रहे हैं।

चेतन देवताओं में तीन प्रमुख देव व देवता हैं जो क्रमशः माता, पिता और आचार्य हैं। इन तीनों देवताओं से सारा संसार परिचित है परन्तु इनके देवता होने का विचार वेदों की देन है। वेद इन्हें देवता इसलिए कहता है कि यह तीनों अपने अपने दिव्य गुणों का दान करते हैं। पहले हम माता शब्द पर विचार करते हैं। माता जन्मदात्री स्त्री को कहते हैं। माता के समान शिशु व किशोर का पालन करने वाली स्त्री भी माता कही जाती है।

माता देव क्यों कही जाती है?

इसका कारण यह है कि माता सन्तान को जन्म देने व पालन करने में अनेक कष्टों को उठाती है और वह सहर्ष ऐसा करती है। वह अपनी सन्तान से किसी प्रतिकार, धन व सेवा आदि के माध्यम से भुगतान की अपेक्षा नहीं करती। यह बात और है कि विवेकशील व बुद्धिमान सन्तानें अपने माता–पिता के उपकारों को जानकर उनकी सेवा करते हैं और माता–पिता के उपकारों से उऋण होने का प्रयत्न करते हैं। इसका लाभ उनको भविष्य में मिलता है।

वह जब विवाहित होकर स्वयं माता–पिता बनते हैं और उनकी सन्तानें होती हैं तो उनके अपने वृद्ध माता–पिता की सेवा के संस्कार उनकी अपनी बाल सन्तानों में आते हैं। इन संस्कारों का लाभ यह होता है कि वह भी बड़े होकर अपने माता–पिता की सेवा करते हैं। अतः सभी युवाओं व दम्पतियों को अपने माता–पिता की सेवा अवश्य करनी चाहिये। इसका उनको यह लाभ होगा कि उनकी सन्तानें भी बड़ी होकर उनकी सेवा किया करेंगी।

स्मरण रहे कि माता को सन्तान को अपने गर्भ में धारण करने में अनेक प्रकार की कठिनाइयों व पीड़ाओं का सामना करना पड़ता है। 10 माह की गर्भावस्था में नाना प्रकार की समस्याओं से उन्हें संघर्ष करना पड़ता है। चिकित्सक माताओं को अनेक प्रकार की सलाह देते हैं व औषधियां बताते हैं जिनका पालन माताओं को करना होता है। सन्तान के जन्म के बाद भी शिशु की रक्षा, उसके पालन एवं पोषण में बहुत सावधानी रखनी पड़ती है। अपना भोजन व आचारण भी एक माता के उच्च गुणों से युक्त युवती के अनुरूप करना पड़ता है जिसमें उन्हें अपनी अनेक इच्छाओं व सुख–सुविधाओं का त्याग करना पड़ता है। ऐसा करके सन्तान सकुशल जन्म ले पाती है व उसका पालन हो पाता है।

हमने दो वर्ष की एक कन्या से फोन पर बातचीत की। यह दो वर्ष की कन्या अभी शब्दों को स्पष्ट रूप से बोल नहीं पाती। उसके माता–पिता, दादा–दादी व बुआ उसे बोलने का अभ्यास करा रहे हैं। अभी 6 माह से 1 वर्ष का समय और लग सकता है। इससे यह ज्ञात होता है कि सन्तान के निर्माण में माता की प्रमुख भूमिका होती है। माता को प्रसव पीड़ा तो होती ही है साथ ही भाषा का ज्ञान कराने में भी बहुत समय देना पड़ता है। अतः सन्तान का यह कर्तव्य होता है कि वह बड़ी होकर माता को सब सुख सुविधायें प्रदान करें और उन्हें मानसिक, शारीरिक व अन्य किसी प्रकार की असुविधा व दु:ख न होने दे। सन्तानों का कल्याण करने और अनेक कष्ट व दु:ख सहन करने के कारण माता अपनी सभी सन्तानों के लिए पूजनीय देवता होती है।

माता के समान पिता की भूमिका भी महत्वपूर्ण

पिता भी सन्तान के लिए एक देवता होता है। पिता से ही सन्तान होती है। सन्तान के जन्म में माता व पिता दोनों की ही महत्वपूर्ण भूमिका है। माता–पिता के द्वारा एक आत्मा माता के गर्भ में प्रविष्ट होती हैं। आत्मा के माता के शरीर होने में ईश्वर की प्रमुख भूमिका होती है। ईश्वर यह सब कैसे करता है, अल्पज्ञ जीवात्मा इसे पूर्णतः नहीं जान सकता। ईश्वर ने सन्तान उत्पन्न करने का अपना एक विधान बना रखा है। उसी के अनुसार सन्तान जन्म लेती है। पिता की भूमिका माता व भावी शिशु के लिए आवश्यकता की सभी सामग्री व सुविधायें जुटाने की होती है। माता को पौष्टिक भोजन चाहिये। इसके साथ स्वस्थ सन्तान के लिए माता का जीवन चिन्ताओं व दु:खों से मुक्त एवं प्रसन्नता से युक्त होना चाहिये।

माता जैसा साहित्य पढ़ती है, विचार व चिन्तन करती है, प्रायः वैसी ही सन्तान बनती है। माता–पिता के चिन्तन के अनुरूप सन्तान की आत्मा में संस्कार उत्पन्न होते जाते हैं। वही संस्कार सन्तान के जन्म के बाद के जीवन में पल्लवित व पुष्पित होते हैं। अतः यह आवश्यक होता है कि गर्भावस्था काल में माता व पिता दोनों सात्विक विचार रखें। वह ईश्वर व जीवात्मा विषयक वैदिक

मान्यताओं का अध्ययन किया करें। वह वैदिक साहित्य पढ़ें व अपने मन में ऐसे भाव उत्पन्न करें कि हमारी सन्तान धार्मिक, साहसी, निर्भीक, देशभक्त, ज्ञानी, सच्चरित्रता आदि के गुणों से युक्त होगी। यदि ऐसा करते हैं तो सन्तान ऐसी ही बन जाती है। पिता की भूमिका माता के समान ही महत्वपूर्ण होती है। इसलिए उसे माता के बाद दूसरा स्थान प्राप्त है। सन्तान का जन्म हो जाने के बाद बच्चे की शिक्षा, उसके पोषण व निर्माण का दायित्व पिता का होता है।

बच्चे का शारीरिक व बौद्धिक विकास भली प्रकार से हो रहा है, पिता को इसका ध्यान रखना पड़ता है। यदि सन्तान को अच्छे शिक्षक व सामाजिक वातावरण मिलता है तो सन्तान एक सुसंस्कृतज्ञ सन्तान बनती है। आजकल वातवारण कुछ बिगड़ गया है। समाज पर विदेशी मानसिकता का प्रभाव बढ़ रहा है। इस कारण सन्तान में वैदिक संस्कार कम व पाश्चात्य सभ्यता के संस्कार अधिक देखे जाते हैं। विकल्प रूप में बच्चों को यदि गुरुकुलीय शिक्षा मिले तो वह अच्छी प्रकार से संस्कारित हो सकते हैं।

आज अच्छे गुरुकुलों का भी अभाव है जहां आचार्यगण माता–पिता के समान व उससे भी अच्छा, स्वामी श्रद्धानन्द जी के समान, व्यवहार करें और बच्चों की सभी प्रकार की शैक्षिक व स्वास्थ्य विषयक आवश्यकतायें गुरुकुल में पूर्ण हों। आर्यसमाज के कुछ गुरुकुल इसकी आंशिक पूर्ति ही करते हैं। आर्यसमाज के गुरुकुलों में वैल्यू एडीसन की आवश्यकता अनुभव होती है। महर्षि दयानन्द ने अपनी पुस्तक व्यवहारभानु में जैसे आचार्य और शिष्यों का उल्लेख किया है, वैसे आचार्य और शिष्य यदि हों, तो समाज का कल्याण हो सकता है।

देश की सरकार मैकाले की पद्धति को प्रमुखता देती है। उसके लिए मोटे–मोटे वेतन भी शिक्षकों को देती है। इस पर भी स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे संस्कारित न होकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर भी देश विरोधी नारे लगाते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। भ्रष्टाचार की घटनायें लगातार बढ़ रही हैं। अपराध कम होने के बाद तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। कश्मीर में युवक संगठित रूप से पत्थरबाजी करते हैं और सरकार मूक दर्शक बन कर देखती है। कुछ करें तो मानवाधिकारवादी लोग सरकार की आलोचना करते हैं। **ऐसा लगता है कि सेना के मार खाने के अधिकार हैं; अपनी रक्षा करने के लिए नहीं।**

यह देखकर यही लगता है कि यदि माता–पिता संस्कारित हों और आचार्य भी वैदिक संस्कारों से युक्त हों तभी बच्चों व शिक्षा जगत का कल्याण हो सकता है। **पिता दूसरा देव है।** आजकल के पिता सन्तानों को धन व सुख सुविधायें तो भरपूर देते हैं परन्तु संस्कार न माता–पिता के पास हैं और न

स्कूलों में, इसलिए नई पीढ़ी आस्तिकता व संस्कारों से दूर जा रही है और वह कार्य कर रही है जो उसे करने नहीं चाहिये।

आचार्य कौन?

आचार्य भी एक देवता होता है। वह बच्चों को दूसरा जन्म, उन्हें विद्यावान् कर देश व समाज के लिए उपयोगी बनाता है जो आगे चलकर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को सिद्ध करने में समर्थ हो सकते हैं व इनकी योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। आचार्य आचरण की शिक्षा देने वाले गुरु को कहते हैं। आचरण की शिक्षा स्वयं सदाचार को अपने चरित्र में धारण करके ही दी जा सकती है। यदि गुरु सदाचारी नहीं होगा तो शिष्य भी सच्चरित्र नहीं हो सकते। अतः आचार्यत्व का कार्य उच्च चरित्र के ज्ञानी व्यक्तियों को ही करना चाहिये, तभी संस्कारित व सच्चरित्र युवक देश को मिल सकते हैं।

प्राचीन काल में राम, कृष्ण व असंख्य ऋषि–मुनि अच्छे आचार्यों की ही देन होते थे। आज वैसे आचार्य होना बन्द हो गये हैं तो राम, कृष्ण, चाणक्य, दयानन्द जैसे नागरिक व महापुरुष होना भी बन्द हो गये हैं। देश की सरकार को चाहिये कि वह अध्यापकों व आचार्यों की सच्चरित्रता के उच्च मापदण्ड बनायें। सभी गुरुजन आस्तिक व वेदों के जानकार होने चाहिये। वह मांसाहारी न हों, धूम्रपान व अण्डों का सेवन करने वाले भी न हों। वह त्याग व सन्तोष की वृत्ति को धारण करने वाले हों। आचार्यगण यम व नियम का पालन करते हों, योगी व ज्ञानी हों। वह वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करने वाले भी होने चाहिए। ऐसे आचार्य यदि होंगे तभी वह नई संस्कारित युवा पीढ़ी को बना सकते हैं। ऐसे गुणों वाले अध्यापक ही आचार्य कहलाने के योग्य होते हैं।

शब्द, भाषा, सामाजिक व राजनैतिक विषयों सहित विज्ञान व गणित आदि विषयों का ज्ञान देने वाले अध्यापक तो हो सकते हैं आचार्य नहीं। आचार्य बनने के लिए उन्हें अपना जीवन वैदिक मूल्यों पर आधारित आचार्य का जीवन बनाना होगा। तभी वह आचार्य कहला सकेंगे और उनके शिष्य चरित्रवान् होने सहित देश व समाज के हितों की पूर्ति करने वाले होंगे। सच्चा आचार्य अपने शिष्य को सच्चरित्रता व ईश्वर, जीवात्मा विषयक जो ज्ञान देता है, उस कारण से वह देवता होता है।

ज्ञान ही संसार की सबसे श्रेष्ठ वस्तु है। ज्ञानहीन मनुष्य तो पशु समान होता है। मनुष्य को पशु से मनुष्य व ज्ञानवान् बनाने में माता, पिता व आचार्य तीनों का अपना– अपना योगदान है। अतः तीनों ही किसी भी मनुष्य के लिए आदरणीय, सम्मानीय व पूज्य होते हैं। इन सबकी तन, मन व धन से सेवा करना सभी सन्तानों व शिष्यों का धर्म व कर्तव्य है। ओ३म् शम।

(देहरादून,12 अप्रैल)

http://www.pressnote.in

मुस्लिमों को पढ़ाया जा रहा कम्युनिज्म का पाठ, पिलाई जा रही शराब

पेइचिंग। चीन के पश्चिमी इलाके में खास तरह के शिविर चल रहे हैं जिनमें रखे गए मुस्लिमों को अपने धार्मिक विचार त्यागकर चीनी नीति और तौर–तरीकों और कम्युनिज्म का पाठ पढ़ाया जा रहा है। यहां लोगों को न सिर्फ खुद की और अपने परिजनों की आलोचना करनी होती है बल्कि चीन की सत्ताधारी कम्युनिस्ट पार्टी का शुक्रिया भी अदा करना होता है।

कुछ दिन पहले ही खबर आई थी कि चीन ने अपने यहां की मुस्लिम आबादी को दोबारा शिक्षित करने के लिए कैंप खोले हैं और अब इस कैंप में रहे एक मुस्लिम ने अपनी आपबीती सुनाई है, जिसे जानकर मुस्लिमों की दयनीय स्थिति का पता चलता है।

कायरत समरकंद नाम के एक मुस्लिम कहते हैं कि उनका एकमात्र अपराध यह था कि वह मुस्लिम हैं और पड़ोसी देश कजाखस्तान गए। सिर्फ इसी आधार पर उन्हें हिरासत में ले लिया गया, तीन दिन तक कड़े सवाल–जवाब किए गए और फिर नवंबर में चीन के शिनजियांग में 3 महीने के लिए 'रीएजुकेशन कैंप' में भेज दिया गया।

एक इंटरव्यू में समरकंद ने कहा कि इस कैंप में उन्हें लगातार बेइज्जती का सामना करना पड़ा और उनका ब्रेनवॉश करने की कोशिश की गई। उन्हें हर दिन घटों–घंटों कम्युनिस्ट पार्टी का प्रॉपेगैंडा पढ़ने को मजबूर किया गया। इतने से भी नहीं बन पड़ा तो हर दिन राष्ट्रपति शी चिनफिंग को शुक्रिया कहने वाले और उनकी लंबी उम्र की कामना वाले नारे लगवाए गए।

समरकंद ने बताया, 'जो इन नियमों का पालन नहीं करते थे या पालन करने से मना कर देते थे, बहस करत थे या फिर पढ़ाई के लिए देरी से आते थे, उनके हाथों और पैरों में तकरीबन 12 घंटों के लिए बेड़ियां बांध दी जाती थी।' इसके अलावा नियमों का पालन न करने वालों का मुंह पानी में डाल दिया जाता था।

मंगलवार को जारी एक रिपोर्ट में यूरोपियन स्कूल ऑफ कल्चर ऐंड थियॉलजी इन कोर्नटल के आद्रियान जेंज ने कहा है कि चीन के इन रीएजुकेशन कैंप में कई हजार मुस्लिमों को रखा गया है। चीन के शिनजियांग प्रांत में करीब 1 करोड़ 10 लाख मुस्लिम हैं और इसकी कुल आबादी 2 करोड़ 10 लाख है। इनमें से एक बड़ी संख्या को हिरासत में ले लिया गया है, जिनमें अधिकतर युवा पुरुष हैं।

समरकंद ने बताया कि करामागे गांव के एक कैंप में ही करीब 5 हजार 700 लोगों को बंदी बनाकर रखा गया है। इनमें लगभग सभी लोग कजख या उईगुर समुदाय के हैं। इतना ही नहीं, करीब 200 लोग धार्मिक चरमपंथ को बढ़ावा देने के मामलों में संदिग्ध हैं। उन्होंने बताया कि उनके साथ रह रहे कई लोगों ने आत्महत्या कर ली।

रीएजुकेशन कैंप में रहे एक अन्य शख्स ऊमर बेकाली ने बताया, इन कैंपों में घटिया गुणवत्ता वाला खाना दिया जाता है, मांस लगभग न के बराबर होता है और फूड पॉइजनिंग बेहद आम हो गया है। यहां रहने वालों को कई बार सजा के तौर पर पोर्क खाने तक को विवश किया जाता है जो इस्लाम में हराम है और धार्मिक चरमपंथ को बढ़ावा देने के आरोपियों को शराब तक पिलाई जाती है।

बेकाली कजख मूल के हैं और शिनजियांग प्रांत की एक टूरिजम कंपनी में काम करते थे। मार्च 2017 में उन्हें हिरासत में लिया गया। 4 दिन तक पूछताछ के दौरान उन्हें सोने नहीं दिया गया। इसके बाद 7 महीने उन्हें पुलिस सेल और फिर 20 दिन इस रीएजुकेशन कैंप में रखा गया। इस दौरान उन्हें वकील तक से संपर्क नहीं करने दिया गया। बता दें कि दोनों समरकंद और बेकाली अब कजाखस्तान में रहते हैं और दोनों ने ही फोन पर इंटरव्यू के दौरान यह सब बताया।

उल्लेखनीय है कि चीन शिनजियांग में रह रहे मुस्लिम (उईगुर) समुदाय पर आतंक फैलाने का आरोप लगाते हुए अकसर कई पाबंदियां लागू करता रहता है। बीते साल सितंबर में ही शिनजियांग प्रांत के अधिकारियों ने उईगुर समुदाय को चेतावनी दी थी कि उन्हें कुरान, नमाज पढ़ने वाली चटाई सहित सभी धार्मिक चीजें सौंपनी होगी वरना वे कड़ी सजा के हकदार होंगे।

एजेंसी, 18 मई

चाइना इस्लामिक असोसिएशन ने कहा
चीन की सभी मस्जिदों को राष्ट्रध्वज फहराना चाहिए

पेइचिंग। चीन के एक सरकारी इस्लामी संगठन ने कहा है कि देश की सभी मस्जिदों को राष्ट्रध्वज फहराना चाहिए। उसने साथ ही कहा है कि "राष्ट्र के सिद्धांत" को बेहतर तरीके से समझने और "देशभक्ति की भावना" को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें चीन का संविधान और समाजवाद के मूल विचारों का अध्ययन करना चाहिए।

असोसिएशन की इस पहल की सराहना की जा रही है। चाइना इस्लामिक असोसिएशन ने अपनी वेबसाइट पर एक पत्र का प्रकाशन किया है। उसमें संगठन ने देशभर के इस्लामी संगठनों और मस्जिदों को प्रमुख स्थान पर हर समय राष्ट्रध्वज लगाए रहने का आग्रह किया है। चीन के सरकारी अखबार ग्लोबल टाइम्स के मुताबकि पत्र में कहा गया है कि ऐसे संगठनों और मस्जिदों को चीन का संविधान, समाजवाद के मूल सिद्धांतों और चीन की पारंपरिक संस्कृति का भी अध्ययन करना चाहिए। (जनसत्ता, 22 मई)

समाज के लिए प्रेरणास्रोत कुशोक बकुला

- दत्तात्रेय होसबोले

लद्दाख संभाग के लेह के सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ बुद्धिस्ट स्टीडीज (CIBS) में 19वें कुशोक बकुला लोबजंग थुबतन छोगनोर रिम्पोछे जन्म शताब्दी समारोह सम्पन्न हो गया। समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह–सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबोले ने सहभागिता की।

लेह में 16 से 18 मई तक चले इस 3 दिवसीय समापन समारोह का आयोजन जम्मू कश्मीर स्टडी सेंटर (JKSC) और इंडिया फाउंडेशन की तरफ से संयुक्त रूप से किया गया।

20वें कुशोक बकुला (12 वर्षीय नाशटन) भी समारोह में शामिल हुए। दत्तात्रेय होसबोले ने कहा कि 19वें कुशोक बकुला बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे इसलिए वो आज भी प्रसांगिक हैं और समाज के लिए प्रेरणास्रोत (रोल मॉडल) हैं। वे आध्यात्मिक नेता, वक्ता, महान बुद्ध विचारक और दूरदर्शी कुशल राजनयिक थे। अगर आज की तारीख में लद्दाख भारत का अभिन्न हिस्सा है तो इसका श्रेय कुशोक बकुला को जाता है। 1947 में जब पाकिस्तान ने जम्मू–कश्मीर पर हमला किया तो उन्होंने लद्दाख के युवाओं को संगठित कर भारतीय सेना को पूर्ण रूप से सहयोग किया। उन्होंने हमेशा लद्दाख को भारत के अभिन्न अंग के तौर पर देखा और इस क्षेत्र को विकसित करने के काफी प्रयास किए।

श्री होसबोले ने कहा कि आज देश के अलग–अलग हिस्सों में अलगाववाद की आवाज उठती हैं। यहां तक कि विश्वविद्यालयों में भी राष्ट्र विरोधी एजेंडे चलाए जा रहे हैं। ऐसे समय में कुशोक बकुला के भाषण युवाओं को सही रास्ता दिखा सकते हैं।

दत्तात्रेय होसबोले ने कुशोक बकुला के मंगोलिया में किए गए शांति प्रयासों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि कुशोक बकुला को मंगोलिया का

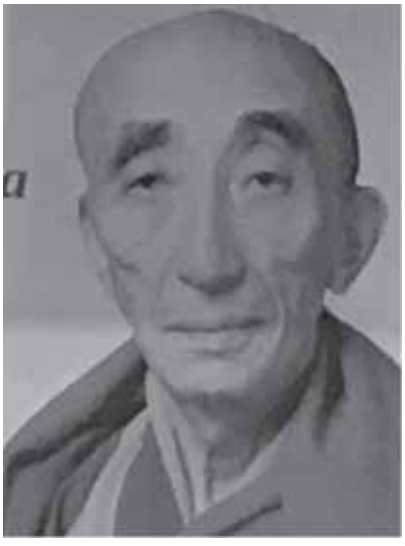

राजदूत नियुक्त करना भारत सरकार का सराहनीय कदम था। जबकि वो प्रोफेशनली राजनयिक नहीं थे। इसके बावजूद उन्होंने मंगोलिया में सांस्कृतिक –आध्यात्मिक और मानवता की पृष्ठभूमि पर दो देशों के सम्बंधों को और प्रगाढ़ किया। कुशोक बकुला के प्रयास से ही मंगोलिया में शांति वापस हुई और कम्युनिस्ट बुद्ध के रास्ते पर आ सके।

कार्यक्रम में जम्मू कश्मीर के उपमुख्यमंत्री कवीन्द्र गुप्ता ने बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित हुए, वहीं अध्यक्षता आईसीपीआर के चेयरमैन प्रोफेसर एस आर भट्ट ने की। कार्यक्रम में मंगोलिया के भारतीय राजदूत जी. गनबोल्ड, लद्दाख अफेयर्स मंत्री छेरिंग दोरजे, नेहरू मेमोरियल लाईब्रेरी के निदेशक शक्ति सिन्हा, आईसीपीआर के सदस्य सचिव प्रो. रजनीश शुक्ला, जेकेएससी ट्रस्टी अनिल गोयल, इंडिया फाउंडेशन के निदेशक आलोक बंसल, आईजीएनसीए से डॉ. मयंक शेखर ने कुशोक बकुला पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

उपमुख्यमंत्री कवींद्र गुप्ता ने 19वें कुशोक बकुला पर कार्यक्रम करने के लिए संस्थाओं को बधाई देते हुए कहा कि महान बौद्ध धर्म गुरू के विचार आज भी समाज को एक नई दिशा देते हैं। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि सीजफायर हुआ है कि वो एक शांति प्रयास है इसका मतलब ये नहीं है कि हम आक्रमण का जवाब नहीं देंगे। भारतीय सुरक्षाबल पूर्ण रूप से सक्षम हैं और देश की सुरक्षा के लिए उन्हें जो भी कार्रवाई करनी होगी वो करेंगे।

कार्यक्रम में प्रोफेसर कुलदीप अग्निहोत्री की किताब 'जम्मू कश्मीर का विस्मृत अध्याय : कुशोक बकुला' का विमोचन किया गया।

19वें कुशोक बकुला जन्म शताब्दी समापन समारोह के पहले दिन 16 मई को जम्मू कश्मीर विधानसभा के स्पीकर डॉ. निर्मल सिंह शामिल हुए और 'बहुजन हिताय–बहुजन सुखाय–लोकानुकम्पाय' और 'जियो स्ट्रेटजी ऑफ हिमालयन रीजन' पर चर्चा आयोजित की गई। जेकेएससी के निदेशक आशुतोष भटनागर ने कहा कि कुशोक बकुला ने जो देश के लिए योगदान दिया है उन महान कार्यों से लोगों को परिचत होना चाहिए। जेकेएससी जम्मू कश्मीर के सभी हिस्सों की समृद्ध और गौरवशाली संस्कृति से लोगों को रूबरू करवा रहा है।

jkscmedia@gmail.com

असम : कोर्ट का बीजेपी विधायक, परिवार को भारतीय नागरिक साबित करने का आदेश

गुवाहाटी : असम के बरखोला विधानसभा क्षेत्र से भाजपा विधायक और उनके परिवार के सदस्यों को विदेशी नागरिकों से संबंधित न्यायाधिकरण ने नोटिस जारी किया है। न्यायाधिकरण ने 'संदिग्ध नागरिक' होने के संदेह में नोटिस जारी किया है। न्यायाधिकरण ने भाजपा विधायक किशोर नाथ, उनकी पत्नी नीलिमा नाथ, चार भाइयों और एक अन्य संबंधी को नोटिस जारी किया है। **शेष पृष्ठ 21 पर....**

हिन्दू युवती ने लव जिहादी की बजाय पिता को अपनाया!

नई दिल्ली। उत्तराखंड में लव जिहाद के मामले में मुस्लिम पति द्वारा अपनी हिंदू पत्नी को उसके पिता की कस्टडी से छुड़ाने की याचिका सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दी है। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस दीपक मिश्रा की अध्यक्षता वाली पीठ ने युवती से मामले को लेकर सीधे तौर पर 10 सवाल ओपन कोर्ट में किए।

इन सवालों का जवाब मिलने के बाद कोर्ट ने उसे उसके परिजनों के साथ भेज दिया। उत्तराखंड की युवती अपने वकील मनोज गोरकेला और पुलिस इंस्पेक्टर कमाल हसन के साथ गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट में उपस्थित हुई। उसके कथित पति दानिश की ओर से पेश वकील ने कहा कि युवती पर उसके परिजनों और पुलिसकर्मियों ने दबाव बनाया है, जिससे वह दानिश से अपने निकाह को इनकार कर रही है और अपहरण का दबाव बना रही है। चीफ जस्टिस ने वकील को चुप कराते हुए कहा कि हम इस मामले में युवती से सीधे बातचीत करेंगे और अपना निर्णय लेंगे। इस दौरान वे किसी भी पक्ष के वकील को बीच में बोलने की अनुमति नहीं देंगे। उन्होंने 10 सवाल पूछे। जिनका युवती ने जवाब दिया।

चीफ जस्टिस के सवाल पर युवती के जवाब

चीफ जस्टिस – आप कौन से कॉलेज में पढ़ती हैं?
युवती – ग्रैफिक ऐरा कॉलेज, भीमताल।
चीफ जस्टिस – क्या पढ़ती हैं?
युवती – बीबीए।
चीफ जस्टिस – यह किस तरह का कोर्स है?
युवती – यह ग्रेजुएशन कोर्स है। मैं फाइनल ईयर में हूं।
चीफ जस्टिस – आपकी सहेली, जिसकी शिकायत पर आपके अपहरण का केस दर्ज हुआ था। वह कहां पढ़ रही है?
युवती – वह मेरे साथ ही पढ़ती है और वह भी मेरे कॉलेज में तृतीय वर्ष की छात्रा है।
चीफ जस्टिस – तुम्हारे कॉलेज की दूरी तुम्हारे घर से कितनी है?
युवती – मेरे घर से मेरे कॉलेज की दूरी 40 किलोमीटर है।
चीफ जस्टिस – क्या तुम आगे पढ़ना चाहती हो और क्या बनना चाहती हो?
युवती – मैं एमबीए करना चाहती हूं और आन्त्रप्रेन्योर बनना चाहती हूं।
चीफ जस्टिस – तुम बालिग हो। अपनी इच्छा की मालकिन हो। तुम अपनी इच्छानुसार कहीं भी जा सकती हो। कहीं भी रह सकती हो। तुम पर किसी भी प्रकार का कोई दबाव तो नहीं है?
युवती – नहीं मुझ पर कोई दबाव नहीं है।
चीफ जस्टिस – तुम अपनी बात खुलकर कर पा रही हो?
युवती – मैं निश्चिंत हूं। यहां मैं अपनी बात खुलकर कह पा रही हूं।
चीफ जस्टिस – तुम्हें अपने पति के साथ रहना है या पिता के साथ?
युवती – मेरी शादी नहीं हुई तो पति कैसा?मैं अपने माता–पिता के साथ रहना चाहती हूं। मैं परिजन के साथ ही खुश हूं।
चीफ जस्टिस – तुम्हारे साथ तुम्हें ले जाने के लिए कोई आया है?
युवती – मेरे माता–पिता मेरे साथ आए हैं।

(डेलीहन्ट, 18 मई)

आतंकी वीडियो देखने, जिहादी साहित्य पढ़ने से कोई आतंकवादी नहीं बन जाता : केरल उच्च न्यायालय

कोच्चि, 14 मई (भाषा)। केरल हाईकोर्ट ने आतंकी गतिविधियों में संलिप्तता के एक आरोपी को जमानत देते हुए कहा कि आतंक से संबंधित वीडियो देखना और जिहादी साहित्य पढ़ने से कोई आतंकवादी नहीं बन जाता।

न्यायमूर्ति एएम शफीक और न्यायमूर्ति पी सोमराजन की पीठ ने मुहम्मद रियास नाम के एक व्यक्ति की एक अपील पर विचार करते हुए यह टिप्पणी की। आरोपी ने अपनी जमानत नामंजूर किए जाने के एनआईए अदालत के आदेश को चुनौती दी थी।

रियास ने कहा कि वह किसी भी आतंकी संगठन का हिस्सा नहीं था। रियास ने अपनी अपील में दलील दी थी कि उससे अलग रह रही उसकी हिंदू पत्नी की शिकायत के बाद उसे आतंकी आरोपों पर गिरफ्तार किया गया था।

याचिकाकर्ता ने कहा कि यह केवल वैवाहिक विवाद से जुड़ा मामला है या उसकी पत्नी ने किसी के दबाव में आकर उसके खिलाफ ये आरोप लगाए हैं। गौरतलब है कि उनकी पत्नी ने इस्लाम धर्म अपना लिया था। सुनवाई के दौरान केंद्रीय एजेंसी एनआईए ने दलील दी कि रियास के पास से दो लैपटाप जब्त किए गए जिसमें जिहाद आंदोलन के बारे में साहित्य, इस्लामी उपदेशक जकीर नाइक के भाषणों के वीडियो और सीरिया में युद्ध से जुड़े कुछ वीडियो हैं।

हालांकि, पीठ ने कहा कि इस तरह के वीडियो सार्वजनिक हैं और लोगों के बीच हैं। सिर्फ इसलिए कि कोई व्यक्ति इन चीजों को देखता है, उसे लेकर उसे आतंकवाद में संलिप्त ठहराना संभव नहीं है।

31 मार्च से 21 अप्रैल 18 तक

अवधधाम ८४ कोसी परिक्रमा

अयोध्या की यह परिक्रमा चैत्र पूर्णिमा से प्रारम्भ होती है। इस बार यह परिक्रमा 31 मार्च,18 से प्रारम्भ होकर 21 अप्रैल,18 को अयोध्या रामकोट की परिक्रमा एवं भंडारे के साथ पूर्ण हुई। परिक्रमा मार्ग 5 जिलों बस्ती, अम्बेडकर नगर, फैजाबाद, बाराबंकी एवं गोण्डा से होकर गुजरती है। यह अयोध्या की सांस्कृतिक सीमा है। अयोध्या से उत्तर स्थित (मखभूमि) मखौड़ा मनोरमा नदी के किनारे स्थित है। जहॉ महाराजा दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ किया था, वहाँ पूजन के पश्चात् परिक्रमा प्रारम्भ हुई।

31 मार्च,18 को कारसेवकपुरम् से परिक्रमा यात्रा प्रारम्भ हुई। यात्रा को विश्व हिन्दू परिषद के अन्तरराष्ट्रीय महामंत्री चम्पत राय ने केसरिया ध्वज दिखाकर रवाना किया, साथ में पुरूषोत्तम नारायण सिंह एवं क्षेत्रीय संगठन मंत्री अम्बरीश सिंह भी मौजूद रहे। रास्ते में मणिराम दास छावनी के महंत पूज्य नृत्य गोपाल दास जी का आशीर्वचन लेते हुए सरयू नदी में पूजन के पश्चात् मखभूमि के लिए प्रस्थान किया।

1 अप्रैल प्रातः मखौड़ा में पूजन के पश्चात् पदयात्रा प्रारम्भ हुई जो रामगढ़, रामरेखा, हनुमानबाग, श्रंगीऋषि, तमसा तट, सूर्य कुण्ड, सीता कुण्ड, आस्तिकन मंदिर, जनमेजय कुण्ड, अमानीगंज, रूदौली, पटरंगा, बेलखरा से नाव द्वारा सरयू पार कर गोण्डा जिले के देवीगंज, जम्मूघाट, राजापुर (तुलसीदास जन्मस्थान), पस्का, नरहरि दास कुटी, बाराह भगवान मंदिर, बाराही देवी, डिक्सिर, अष्टावक्र मुनि आश्रम, अमदही, महर्षि यमदग्नि आश्रम जमथा, कपिल मुनि आश्रम महंगूपुर, पहलवान वीर बाबा नवाबगंज, रेहली, सिकन्दरपुर होते हुए 20 अप्रैल सायंकाल अयोध्या पहुंची। 21 अप्रैल रामकोट परिक्रमा फिर दोपहर भण्डारे के साथ परिक्रमा पूर्ण हुई।

सम्पूर्ण परिक्रमा मार्ग में लगभग 450 लोगों ने सहभागिता की जिसमें 100 महिला, 150 संत एवं 200 लोगों ने भाग लिया, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, बंगाल, झारखण्ड, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, छत्तीसगढ़ एवं नेपाल के तीन जिलों के 13 लोगों ने भाग लिया।

यात्रा प्रारम्भ के 3 दिन साथ रहने के बाद झारखण्ड के 47 पदयात्रियों ने आगे की परिक्रमा बस से पूर्ण की, क्योंकि इसमें सरकारी कर्मचारी एवं बड़े–बुजुर्ग थे। यात्रा मार्ग में सभी पड़ावों पर स्थानीय जनता एवं कार्यकर्ताओं ने स्वागत, सत्कार फूल–माला, तोरण द्वार एवं डी.जे. आदि के साथ किया। रात्रि पड़ाव स्थल पर संतों का प्रवचन एवं रथ के माध्यम से रामायण सीरियल का प्रदर्शन होता रहा। परिक्रमा प्रतिदिन लगभग 15 किलोमीटर चलती थी यात्रा में 5 वाहन भी थे।

परिक्रमा यात्रा का बस्ती में हर्रैया विधायक अजय सिंह, गोसांईगंज भा0ज0पा0 विधायक इन्द्र प्रताप तिवारी खब्बू, बीकापुर विधायक शोभा सिंह, मिल्कीपुर विधायक बाबा गोरखनाथ, रूदौली विधायक राम चन्द्र यादव, दरियाबाद विधायक सतीश शर्मा, तरबगंज विधायक प्रेम नारायण पाण्डेय एवं मनकापुर विधायक एवं मंत्री मा. रमापति शास्त्री ने भी अपने–2 क्षेत्र में स्वागत किया। तरबगंज विधायक प्रेम नारायण पाण्डेय ने रॉगी में सम्पूर्ण भोजन व्यवस्था एवं सभी परिक्रमार्थियों को अंग वस्त्र एवं मिष्ठान्न देकर स्वागत किया। रमापति शास्त्री मंत्री– उ0प्र0 सरकार ने भी सभी को जलपान, माला एवं दक्षिणा देकर स्वागत किया।

प्रस्तुति : सुरेन्द्र सिंह
84 कोसी परिक्रमा प्रमुख, अयोध्या

बेटी बचाओ आंदोलन

मुरादाबाद 14 मई। विश्व हिंदू परिषद जिला मुरादाबाद के जिला मंत्री राकेश अत्रि के नेतृत्व में एक पांच सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी महोदय को दिया । प्रान्त टोली सदस्य रोहन सक्सेना ने बताया कि 06 मई की जो घटना गोविंदपुर खुर्द में घटी हुई वह घटना घोर निंदनीय का विषय है और ऐसी घटना की पुनरावृत्ति न हो इस के लिए विश्व हिन्दू परिषद आगामी समय में ''रोटी कमाओ बेटी बचाओ'' के नाम से महापंचायत का आयोजन क्षेत्र में करेगा।

विभाग संयोजक गौरव भटनागर

धूमधाम से मनाई गई भगवान गौतम बुद्ध जयंती

इटावा, 30 अप्रैल। भगवान गौतम बुद्ध की 2562 वीं जयंती/वैशाखी पूर्णिमा पर आज नगर के लाइनपार भर्थना रोड पर अड्डा पाय के निकट सद्भावना बौद्ध इण्टर कॉलेज के प्रांगण में प्रातःकाल से धम्म प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। विभिन्न क्षेत्रों में समाज की सेवा करने वाले वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान किया गया। ''बुद्धम् शरणम् गच्छामि'' की गूंज के साथ भव्य शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई जो शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए नुमाइश पाण्डाल के निकट स्थित बौद्ध पार्क पहुंची।

सम्मान समारोह में सदर विधायक सरिता भदौरिया ने कहा भगवान गौतम बुद्ध के आदर्शो पर चलकर समाज व राष्ट्र में सुख व शांति की स्थापना की जा सकती है। पूर्व विधायक रघुराज सिंह शाक्य ने कहा भगवान बुद्ध के शील, समाधि व प्रज्ञा के विचारों को अपनाकर दुनिया में कई देश विकास के मार्ग पर अग्रसर हुए है। कार्यक्रम एवं शोभायात्रा के संरक्षक/अध्यक्ष बालभ्यासी शाक्य ने कहा कि देश के सांसदों एवं विधायकों को गौतम बुद्ध के विपश्यना का पाठ पढ़ाया जाए तो भेदभाव और भ्रष्टाचार को खत्म किया जा सकता है। पूर्व विधायक शिव प्रसाद यादव ने कहा कि आज समूचे समाज को जाति धर्म को भुलाकर भगवान बुद्ध के आदर्शो को अपनाने की जरूरत है। इससे पूर्व धम्म प्रवचन में बड़ी संख्या में जुटे बौद्ध अनुयायियों ने प्रवचनों का रसपान किया उसके बाद सभी को खीर एवं भोजन का वितरण किया गया।

शोभायात्रा में सर्वप्रथम रथ पर गौतम बुद्ध की प्रतिमा, इसके बाद राजा सुद्धोधन, महामाया, हंस की रक्षा करते हुए गौतम बुद्ध, माता यशोधरा, पंचभर्दीय ब्राह्मणों को उपदेश देते हुये बुद्ध, चक्रवर्ती राजा सम्राट अशोक महान, डा0 भीमराव अम्बेडकर, शिक्षा के जनक ज्योतिवा राव फुले व उनके साथ माता सावित्री बाई फुले, सुजाता द्वारा खीर का दान तथा राजा चन्द्रगुप्त मौर्य आदि सहित दर्जन भर से ज्यादा मनोहारी झांकियां सामिल थीं। बाइकों पर पंचशील ध्वज लिये हुए सैकड़ों युवा एवं यात्रा में मातृ शक्ति के रूप में महिलायें और इकदिल आश्रम के सन्त परमानन्द महाराज सहित बड़ी संख्या में बौद्ध अनुयायियों ने भाग लिया।

शोभा यात्रा का उपरोक्त कॉलेज से शुभारम्भ होने के बाद सरिता स्टूडियों, भर्थना चौराहा, स्टेट बैंक, बौद्ध विद्या इण्टर कालेज, विजय नगर चौराहा स्थानीय लोगों एवं व्यापारियों ने

ने बताया कि 06 मई को जो घटना हिन्दू समाज के साथ घटित हुई वह निंदनीय है परंतु शनिवार को जो पुलिस प्रशासन के द्वारा हिन्दू समाज को बेबजह फसाने का प्रयास किया गया और 60 लोगों पर अज्ञात मुकदमा व लड़की के पिता,भाई व 10 रिश्तेदारों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज हुआ यह पुलिस की मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को दर्शाता है।

मांगें

1. 'आरती को किसी भी कीमत पर वापस लाया जाये'
2. 'आरती के परिवार के लोगों पर जो मुकदमे लगे हैं, उनको अविलम्ब हटाया जाए'
3. 'पीड़ित परिवार जिस मकान में रहता था उसको पुलिस द्वारा ढ़हाया गया है, उसका पुनः निर्माण करके दिया जाये'
4. 'जो भी पुलिस के अधिकारी इस मामले में हिन्दू समाज को फसा रहे थे, उनके खिलाफ कठोर से कठोर कार्यवाही की जाये व उनको निलंवित कर जाये'
5. '60 अज्ञात लोगों के खिलाफ जो मुकदमा दर्ज किए गये हैं उसको अविलम्ब हटाया जाए'

विशाल द्रविड (विभाग गौरक्षा प्रमुख), वरुण शर्मा (महानगर संयोजक), संजय ठाकुर (महानगर सह संयोजक), मोहन सिंह (जिला कोषाध्यक्ष), आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

rohan.vhp@gmail.com

स्वागत किया। उसके बाद नबाब कोचिंग सेन्टर विजय नगर, राम नगर क्रासिंग के पास तथा अम्बेडकर पार्क पहुंचने पर यात्रा का भव्य स्वागत हुआ एवं लोगों को मीठा जल वितरित किया गया। यहां के बाद रेलवे स्टेशन बजरिया, शास्त्री चौराहा, जीआईसी के पास आनन्द फर्नीचर, नौरंगाबाद चौराहा, पुल कहारन, तिकोनिया, पक्की सराय पर राजस्थान हैण्डलूम इम्पोरियम के स्वामी लाखन सिंह कुशवाहा व कांग्रेस नेता कोमल सिंह कुशवाहा ने यात्रा एवं साथ चल रहे नेताओं व बौद्ध अनुयायियों का स्वागत कर उन्हें जलपान कराया यहां से यह यात्रा नगर पालिका चौराहा, राजागंज चौराहा, कोतवाली चौराहा, पुरविया टोला, होते हुए पक्का तालाब चौराहा पर पहुंची। विहिप नेता श्री कृष्ण वर्मा, अजय वर्मा, पप्पू वर्मा आदि ने भी मीठा जल पिलाया। इसके बाद के0के0 डिग्री कालेज के निकट गंगाराम कुशवाहा ने यात्रा का स्वागत किया। उसके बाद यह यात्रा नुमाइश चौराहा होते हुए पाण्डाल के निकट स्थित गौतम बुद्ध पार्क में पहुंची। जहां भगवा बुद्ध की प्रतिमा पर पूजन एवं पुष्पार्पण तथा शांति की प्रार्थना के साथ यात्रा का समापन हुआ।

ankitacomputers.143@gmail.com

नगर संकीर्तन यात्रा

इटावा, 29 अप्रैल। अखिल भारतीय श्री राधामाधव संकीर्तन मण्डल के तत्वावधान में प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को निकलने वाली नगर संकीर्तन यात्रा कटरा टेक चन्द्र (पचराहा) निवासी विष्णुनरायण शोरावाल के आवास से निकाली गयी। यात्रा भ्रमण के दौरान श्रद्धालु भक्तों ने युगल सरकार की आरती पूजन कर स्वागत किया और पुष्प वर्षा की।

रविवार को प्रातः सभी श्रद्धालु विष्णुनरायण शोरावाल के आवास पर एकत्र हुए, जहां श्री राधामाधव की पूजा–आरती कर श्री ठाकुर के डोले को कांधे पर रख हरे राम–हरे कृष्णा का संकीर्तन करते हुए यात्रा आरम्भ हुई।

संत समिति

इटावा, 11 मई। स्वामी शिवानन्द जी को सन्त समिति का प्रदेश अध्यक्ष घोषित किये जाने के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्तीय अध्यक्ष श्रीकृष्ण वर्मा, स्वामी प्रदीपानन्द, अजय सिंह कुशवाहा मीडिया प्रमुख, पं0 जितेन्द्र तिवारी, प्रवीण चतुर्वेदी, मनोज कुमार, राज कश्यप, शिवम कश्यप एवं कल्लू राजपूत आदि भक्तगण भी उपस्थित रहे।

ajaykumarsingh000999@gmail.com

बजरंग दल

सिलचर, असम। 22–29 अप्रैल बजरंग दल का शौर्य प्रशिक्षण वर्ग आयोजित हुआ जिसमें त्रिपुरा उपप्रांत के 146 शिक्षार्थी सहभागी हुए। दूसरे चरण का वर्ग 22–29 जुलाई में बराक उपत्यका के शिक्षार्थियों के लिए आयोजित किया जाएगा।

ajeyakp@gmail.com

विहिप महामंत्री मिलिंद परांडे का नागरिक अभिनन्दन समारोह

विश्व हिंदू परिषद परिषद राँची महानगर के तत्वावधान में 9,मई, 2018 अपराह्न 5.45 बजे कडरू स्थित चेम्बर भवन में नवनियुक्त विहिप महामंत्री मिलिंद परांडे का नागरिक अभिनंदन किया गया। मिलिंद परांडे ने कहा दायित्व एक व्यवस्था है। हमारा मूलभूत लक्ष्य सामाजिक परिवेश का परिवर्तन है। जीवन में गृहस्थ आश्रम स्वयं पर महान होता है, जो संपत्ति का निर्माण करने वाला होता है। जीवन के सभी व्यक्तिगत कार्यों को करते हुए गृहस्थ कार्यकर्ता कार्य करता है इसलिए समाज का नेतृत्व करने वाला गृहस्थ कार्यकर्ता को उत्तम माना गया है।

उन्होंने कहा हिंदुत्व का कार्य करना व हिंदू समाज की रक्षा आवश्यक है परंतु आज अनेक चुनौतियां हैं । हमारी पहचान हिंदू है। हिंदुत्व के लिए जाति सम्प्रदाय का कोई स्थान नहीं है। जीवन में संप्रदाय का अभिमान होना स्वाभाविक है परंतु सम्प्रदाय का अहंकार हो जाए तो विनाशक हो जाता है।

उन्होंने कहा पश्चिमी सभ्यता के आक्रमण के कारण ही हमारे संस्कार का क्षरण हो रहा है। 2000 से ज्यादा ईसाइयों की इकाइयां अपनी गतिविधि को बढ़ाने के लिए कार्य कर रहा है। आज झारखंड प्रांत के सिमडेगा जिला ईसाई बहुल बन गया है तथा साहिबगंज व पाकुड़ जिला बांग्लादेशी घुसपैठ के कारण सामाजिक असंतुलन बढ़ता चला जा रहा है, वह मुस्लिम बहुल क्षेत्र बनने की ओर अग्रसर है।

उन्होंने कहा श्री राम जन्मभूमि के स्थल पर श्रीराम मंदिर ही बनेगा। अयोध्या की सांस्कृतिक परिधि में कोई मस्जिद नहीं बनेगा। बाबरी ढांचा हिंदू के अपमान का प्रतीक था। इस कलंक को मिटाया जा चुका है । अब बाबर के नाम देश के अंदर कोई भी चीज नहीं बनेगा। मंदिर उसी पत्थर व उसी प्रारूप का जो श्री राम जन्मभूमि न्यास पहले ही तय कर चुका है, उसी के अनुरूप बनेगा।

श्री परांडे ने कहा कि श्री राम जन्मभूमि में मंदिर बनाने से हिंदू विचारधारा की विजय होगा, इसलिए मुसलमान विरोध करता है। मुस्लिम कट्टरपंथी से मुकाबला करना है तो सशक्त समाज बनाना होगा। हिंदू शक्ति का प्रतीक श्री राम मंदिर है। अपने संगठन को गांव–गांव तक व जन–जन तक बढ़ाना होगा। हमारा संगठन लगभग 7000 गांव तक है जिसे एक लाख गांव तक बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा संपूर्ण विश्व में शांति एवं उत्थान हिंदू चिंतन से ही संभव है। जिस चिंतन में सामर्थ्य व ऐश्वर्य नहीं उसका कोई मान्य नहीं इसलिए करोड़ों हिंदू समाज को सशक्त होना ही होगा ।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से झारखंड के प्रांत मंत्री डॉ0 बीरेंद्र साहू, प्रांत उपाध्यक्ष ध्रुवदेव तिवारी, देवी प्रसाद शुक्ला, प्रांत संगठन मंत्री अकारपु केशव राजू, विभाग मंत्री कृष्ण जी, ग्रामीण जिला मंत्री संजय कुमार साहू, महानगर मंत्री पारसनाथ मिश्रा, प्रांत समन्वय प्रमुख अशोक अग्रवाल, महानगर संयोजक रवि शंकर राय, सहसंयोजक रोहित सिंह परमार,गुरविन्दर सिंह सेठी, अमर प्रसाद, मंजू सिंह, राम राजा, कैलाश केसरी, आशुतोष मिश्रा, जुगल किशोर, मिथिलेश मिश्रा, डॉ ज्योति श्रीवास्तव, दीपा रानी कुंज, सीमा मात्रा, प्रफुल्ल कुमार मिश्रा, सुमन सौरभ तिवारी, प्रमोद मिश्रा, दीपक साहू सहित कई कार्यकर्ता उपस्थित थे।

११० बजरंगियों ने ली त्रिशूल दीक्षा

विश्व हिंदू परिषद–बजरंगदल, जमशेदपुर महानगर के तत्वावधान में 29 अप्रैल, 2018 को पूर्वाह्न 11.00 बजे आयोजित त्रिशूल दीक्षा कार्यक्रम में 13 प्रखण्ड के 110 बजरंगियों ने त्रिशूल दीक्षा ली।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता झारखंड प्रांत के मंत्री डॉ० बिरेन्द्र साहु ने कहा कि कार्यकर्त्ताओं को वर्तमान समय में सजग रहने की आवश्यकता है । आज हम एक ओर मुस्लिम जेहादी गतिविधि के कारण बेटी–बहन के साथ राष्ट्र असुरक्षित होता जा रहे हैं वहीं दूसरी ओर देश में भोले–भाले सनातनी समाज के लोगों को लोभ व भय दिखाकर धर्मान्तरित कर हमारे लोगों को ही राष्ट्रद्रोही बनाया जा रहा है।

डॉ० साहु ने कहा विश्व हिन्दू परिषद का मुख्य उद्देश्य समाज की सेवा, समाज की सुरक्षा व संस्कारयुक्त समाज खड़ा करना है। सशक्त समाज से ही सशक्त राष्ट्र की निर्माण संभव है। उन्होंने कहा झारखण्ड प्रांत में

शेष पृष्ठ 16 पर....

एक दूजे के हुए 11 दिव्यांग दम्पति

रांची 14 मई 2018। मारवाड़ी सहायक समिति के हरमू रोड़ रांची स्थित प्रांगण में 11 दिव्यांग दम्पतियों का विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सभी ने अग्नि को साक्षी मानकर साथ –साथ जीवन जीने की कसमें खायी।

विश्व हिंदू परिषद झारखंड समन्वय मंच व मारवाड़ी महिला मंच रांची महानगर की शाखा के तत्वावधान में गायत्री परिवार रांची के श्री जटा शंकर झा जी ने वैदिक मंत्रोच्चार से विवाह संपन्न कराया ।

ये जोड़ियां समन्वय मंच, विश्व हिंदू परिषद झारखंड प्रांत की कमजोर समाज व दिव्यांग आदि के सेवा के लिए बनाई ''बिरसा सेवा न्यास'' द्वारा आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से चुने गए। सभी जोड़ियों के माता–पिता अथवा उनके समाज और परिवार के सहमति व उनकी उपस्थिति मे विवाह सम्पन्न हुए।

यह सभी दिव्यांग बंधु समाज के अंतिम छोर पर बैठे हुए हैं, अपनी शारीरिक विकलांगता मानसिक विकलांगता के चलते समाज से अलग–थलग पड़े रहते हैं. यदि समाज में ये समरस होने का प्रयास भी करते हैं तो पग–पग पर उन्हें मानसिक सामाजिक बाधाएं झेलनी पड़ती है, ठेस और कभी–कभी तो प्रताड़ना तक झेलनी पड़ती है।

मारवाड़ी समाज की महिला शाखा द्वारा प्रत्येक जोड़ी को घर गृहस्थी के लिए आवश्यक सामान, वस्तुएं, फर्नीचर और यहां तक की राशन तक उपलब्ध कराया गया है। सभी जोड़ियों को एक–एक जियो मोबाइल फोन भी उपहार में दिया गया। 11 जोड़ियों का 11 यजमानों (दम्पत्तियों) ने कन्यादान की।

विश्व हिंदू परिषद समन्वय मंच द्वारा पिछले 2 वर्षों में लगभग 500 से अधिक सामूहिक विवाह अभी तक कराए कराए जा चुके हैं। समन्वय मंच का यह

प्रयास है कि समाज की सेवा करने वाले समाज के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्तियों को राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए सामूहिक का विवाह का आयोजन का आयोजन लोग या संस्थाएं अपने परिवार समाज के धार्मिक सामाजिक अनुष्ठानों के साथ–साथ करें। समाज में विवाह उत्सव पर जो आडम्बरों और दिखावे में व्यय होता है, उसे बचा कर उस बची धनराशि का उपयोग एक सार्थक समाज का निर्माण करने में जा सके ऐसा ही एक प्रयास। श्री कृष्ण प्रणामी ट्रस्ट ,मारवाड़ी युवा मंच, अग्रवाल सभा, सेवा भारती, केंद्रीय सरना समिति, कल्याण आश्रम आदि का सराहनीय योगदान होता है ।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मारवाड़ी महिला मंच की रेखा अग्रवाल, मीरा बटवाल, मंजू केडिया, विश्व हिंदू परिषद समन्वय मंच के प्रांत प्रमुख अशोक अग्रवाल, प्रांत उपाध्यक्ष ध्रुवदेव तिवारी, झारखंड के प्रांत संगठन मंत्री केशव राजू, रूपा अग्रवाल, दीपा डालमिया, रीना सुरेखा, अन्नू पोद्दार, मंजू लोहिया, गिरीश प्रसाद, राजेंद्र केडिया, नारायण पटवारी, अमर प्रसाद, प्रमोद अंबष्ट, भारत विकास परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती सिन्हा जी, अशोक कुमार सिंह, रामप्रताप सिंह, ज्ञान प्रकाश सहित अनेक कार्यकर्ताओं की महती भूमिका रही।

प्रस्तुति : अशोक अग्रवाल
समन्वय मंच, विहिप, झारखण्ड

पृष्ठ 15 का शेषांश.....

धर्मान्तरण, लवजिहाद, गोवंश हत्या व तस्करी, लैंडजिहाद, बंगलादेशी व रोहिंग्या घुसपैठ की गतिविधियाँ तेजी के साथ चल रही है। समय रहते समाज व सरकार इस ओर ध्यान नहीं दिया तो झारखंड में भयावह स्थिति आने से कोई नहीं रोक सकेगा। आज सिमडेगा जिला ईसाई बहुल बन गया है तथा साहिबगंज, पाकुड, राँची, जमशेदपुर, चाईबासा, बोकारो सहित अनेक जिलों में मुस्लिमों के आतंक लगातार बढ़ती जा रही है। धार्मिक व सामाजिक शोभायात्रा सुरक्षित नहीं है। जेहादियों द्वारा जानलेवा हमला व पत्थरबाजी आम बात बन गई है। युवाओं से आह्वान किया गया कि विहिप के मूलमंत्र सेवा, सुरक्षा व संस्कार को आत्मसात कर सशक्त समाज निर्माण के सहयोगी बने।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष अवतार सिंह गांधी व संचालन मंत्री जनार्दन पाण्डेय व धन्यवाद ज्ञापन बजरंगदल संयोजक चन्दन सोनी ने की।

प्रांत संगठन मंत्री केशव राजू, सुजीत साहु, संजय कुमार, देवेंद्र गुप्ता, दीपक शर्मा, मनीचन्द आप्ट, सुमन अग्रवाल, संजय चौरसिया, मिथलेश महतो, चन्दन चौबे, हरेराम ओझा, अरूण सिंह, चन्दना बनर्जी सहित लगभग 400 कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

drbirendra1966sahu@gmail.com

विहिप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष कोकजे जी का जोरदार स्वागत

इंदौर 1 मई। इन्दौर के सम्माननीय नागरिकों ने विहिप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री वी0एस0 कोकजे के सम्मान में नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन अमरदास हाल, चोईथराम हास्पिटल के पास किया।

जिसमें श्री कोकजे को आशीर्वाद प्रदान करने के लिए प0पू0 संत श्री अमृतराम जी, लक्ष्मणदास जी, रामगोपालदास जी, दत्त मंदिर के अण्णा जी एवं श्री राधे राधे बाबा भी उपस्थित रहे।

विहिप के मालवा प्रांत संगठन मंत्री ब्रजकिशोर भार्गव, संघ के विभाग संघचालक शैलेन्द्र महाजन, इंदौर की महापौर मालिनी लक्ष्मणसिंह गौड, इंविप्रा के अध्यक्ष शंकर लालवानी एवं शहर के समस्त जनप्रतिनिधि विधायक, पार्षदगण एवं हिंदू समाज के सभी जातियों के प्रमुखों एवं सामाजिक संगठनों ने श्री कोकजे का सम्मान किया।

कार्यक्रम का संचालन विकास दवे ने किया। कांतिभाई पटेल ने श्री कोकजे जी का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। मंच पर संतों का स्वागत मुकेश चौधरी, रमेश चौकसे, रवि कसेरा, नितिन पाटीदार, तन्नु शर्मा ने, आभार मालासिंह ठाकुर ने व्यक्त किया। संघ, विहिप के साथ ही परिवार संगठन के हजारों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

a2z.graphic@gmail.com

दुर्गावाहिनी वर्ग

उमरिया, 1–7 मई। विहिप महाकोशल प्रान्त का दुर्गावाहिनी वर्ग उमरिया जिला में सम्पन्न हुआ, वर्ग में कुल 77 बहनें शामिल हुई, व 13 जिलों का प्रतिनिधित्व था। वर्ग में केंद्रीय मंत्री प्रशांत हरतालकर, दुर्गा0अ0भा0सह संयोजिका प्रज्ञा महाला, क्षेत्र संगठन मंत्री दिनेश उपाध्याय, क्षेत्र मंत्री राजेश तिवारी, लालबहादुर जी का बौद्धिक व प्रान्त की संयोजिका मालती शर्मा, सुनीता गर्ग, नेहा प्यासी का वर्ग संचालन में विशेष सहयोग रहा।

प्रस्तुतिः राजेश तिवारी
प्रान्त मंत्री विहिप महाकोशल
advrajeshtiwari88@gmail.com

पृष्ठ 06 का शेषांश....

आबादी वाले देशों में गिने जाते हैं।

यूरोप में मुसलमानों की बढ़ती संख्या से ना सिर्फ यहां का समाज, बल्कि सियासत भी तब्दील हो रही है। मुसलमानों और आप्रवासियों का विरोध करने वाली दक्षिणपंथी पार्टियों की लोकप्रियता बढ़ रही है। सीरिया, अफगानिस्तान और इराक जैसे देशों में लगातार खिंचते चले जा रहे संकट लगातार लोगों को यूरोप की तरफ धकेल रहे हैं। बड़े पैमाने पर हो रहे आप्रवासन को रोकने के लिए संकटग्रस्त देशों में चल रहे संकटों को सुलझाने पर ध्यान देना होगा।

और जो लोग अपना देश छोड़ कर यूरोप में आ चुके हैं, उन्हें नई जगह के नए कायदे सीखने होंगे। तभी वे यहां के समाज का हिस्सा बन पाएंगे। धीरे–धीरे यूरोपीय लोगों को भी उनके तौर तरीकों की आदत हो जाएगी। सरकारें इस समय एकीकरण की इसी प्रक्रिया पर जोर दे रही हैं। लेकिन इसमें समय लगेगा। तब तक यूरोप में इस्लाम को लेकर चल रही बहस अलग–अलग मुद्दों के साथ दुनिया का ध्यान अपनी तरफ खींचती रहेगी।

(डॉयनेवेले, बॉन, जर्मनी, 18 मई)
(जनसत्ता, 22 मई)

विहिप अध्यक्ष ने लिया संतों का आशीर्वाद

हरिद्वार, 12 मई। विश्व हिंदू परिषद के नवनियुक्त अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु सदाशिव कोकजे, कार्याध्यक्ष आलोक कुमार, महामंत्री मिलिंद पराण्डे तथा संयुक्त महामंत्री वेंकट कोटेश्वर राव ने धर्मनगरी पहुंचकर संतों का आशीर्वाद लिया है। अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु सदाशिव कोकजे भारत माता मंदिर के संस्थापक पू. सत्यमित्रानंद गिरि जी व गायत्री परिवार प्रमुख डॉ. प्रणव पंड्या व शैलदीदी से मिलने के लिए गायत्री तीर्थ शांतिकुंज पहुंचे। यहां दोनों ने भारतीय संस्कृति के विस्तार के लिए मिलकर काम करने की बात कही।

विहिप के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष कोकजे ने हिंदू समाज के विकास उत्थान के लिए सहयोग की अपील की।

विहिप अध्यक्ष कोकजे श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़े पहुंचकर संतों से आशीर्वाद लिया। अखाड़े के आचार्य म0मं0 स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज ने अयोध्या में राम मंदिर के संबंध में विस्तृत चर्चा की। म0मं0 स्वामी कैलाशानंद महाराज, प्रज्ञा भारती, देवानंद महाराज, हरिहरानंद महाराज, कृष्णानंद महाराज, प्रेमदास महाराज आदि मौजूद रहे। इसके बाद अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष जूना अखाड़े पहुंचे। जहां उनका अ0भा0 अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष श्रीमहंत नरेंद्र गिरि एवं अन्य संतों ने स्वागत किया।

गंगा की स्वच्छता के लिए लेना होगा संकल्प

कनखल स्थित हरिहर आश्रम में संतों की बैठक में कोकजे ने कहा कि परिषद हमेशा से संतों के साथ और संत हमेशा परिषद के साथ खड़ी रही है। संतों के ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। राम मंदिर निर्माण में अगर कोर्ट का फैसला हित में नहीं आता है तो केंद्र सरकार पर कानून बनाकर राम मंदिर का निर्माण कराया जाएगा। राम मंदिर

कोर्ट ने की देरी तो जनता करेगी राम मंदिर पर फैसला

विश्व हिंदू परिषद के नविनर्वाचित अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष विष्णु सदाशिव कोकजे ने कहा कि कोर्ट में अगर देरी हुई तो जनता राम मंदिर निर्माण पर स्वयं फैसले ले लेगी। विहिप के प्रभाव से हिंदू धर्म के विरोधी आज मठ–मंदिरों में माथा टेक रहे हैं।

उन्होंने कहा कि समस्त सामाजिक सुधार शासन कर देगा, ये किसी भी सूरत में संभव नहीं हो सकता। दलितों के घर भोजन करने और उनके साथ फोटो खींचवाने से समाज में समरसता नहीं आएगी, बल्कि सुख–दुख में भागीदारी निभाने से उनका उद्धार होगा।

प्रेस क्लब में संवाद कार्यक्रम में पत्रकारों के सवालों के जवाब देते हुए कोकजे ने कहा कि राम जन्मभूमि मंदिर मसले में सुप्रीम कोर्ट छह माह में निर्णय दे देगी। यदि निर्णय विरुद्ध आया या देरी हुई तो जनता सांसदों को मंदिर बनाने के लिए विवश कर देगी। जनता का फैसला सर्वोपरि होता है। इस दौरान कार्याध्यक्ष आलोक कुमार, महामंत्री मिलिंद परांडे, उपाध्यक्ष चंपत राय, जीवेश्वर मिश्रा, बालकृष्ण नाईक, संयुक्त महामंत्री वेंकट कोटेश्वर राव, केंद्रीय मंत्री राजेंद्र पंकज, अशोक तिवारी, प्रांतीय संगठन मंत्री संजय और परमार्थ समिति के सदस्य दिनेश कुमार भी उपस्थित रहे।

बुद्ध जयन्ती कार्यक्रम में विहिप कार्याध्यक्ष

नई दिल्ली, 30 अप्रैल। भगवान बुद्ध की प्रज्ञा करुणा व समता की शिक्षा से ही विश्व शान्ति संभव है। विहिप कार्याध्यक्ष आलोक कुमार ने बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर दक्षिणी दिल्ली के बुद्ध विहार में दर्शन–पूजन के उपरान्त कहा कि भारत की पावन धरा पर अवतरित भगवान बुद्ध ने दुनिया को सत्य, अहिंसा, करुणा, प्रज्ञा, समता (सामाजिक समरसता) का संदेश देकर एक भेद–भावमुक्त समाज की स्थापना की थी। विश्व शान्ति के लिए आज उन सिद्धांतों की पुनः प्रतिष्ठा की महती आवश्यकता है।

श्री कुमार ने यह भी कहा कि गत सप्ताह हम नव नियुक्त विहिप पदाधिकारियों को महाराष्ट्र में बाबा साहेब अम्बेडकर जी की दीक्षा भूमि के दर्शन का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ। बौद्ध धर्म की तुलना साम्यवाद से करने वालों

को आड़े हाथों लेते हुए विहिप कार्याध्यक्ष ने कहा कि बाबा साहेब डा अम्बेडकर ने स्वयं कहा था कि यह तुलना बेमानी है। साम्यवाद जबरदस्ती करता है जबकि भारत की धरती पर जन्मा बौद्ध धर्म अहिंसा व करुणा का उपासक है।

जगत्ज्योती बौद्ध विहार के प्रभारी भिक्षु भदंते करुणानन्द महाथेरो ने कहा कि जिस पवित्र स्थल पर आज हम बैठे हैं, सैंकड़ों वर्ष पूर्व, भगवान बुद्ध स्वयं यहाँ पर आए थे तथा अनेक बौद्ध भिक्षुओं की यह तपस्थली भी रही है। उन्होंने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि विश्व भर के हिन्दुओं को संगठित रखने वाली संस्था विश्व हिन्दू परिषद के कार्याध्यक्ष आज यहाँ पधारे हैं। यूं तो श्री आलोक कुमार पहले भी इस मंदिर में अनेक अवसरों पर हम सब के बीच आते रहे हैं किन्तु, विहिप कार्याध्यक्ष बनने के बाद वे पहली बार यहाँ आए हैं। अतः हम उनका हृदय से स्वागत करते हुए उनकी नई जिम्मेवारी के सफलता पूर्वक निर्वहन हेतु प्रार्थना करते हैं।

vinodbansal01@gmail.com

सुभाषित

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।।

हे नारद जी, न तो मैं बैकुण्ठ में रहता हूं, न योगियों के हृदय में बसता हूं। मेरे भक्तगण जहां मेरी महिमा का गायन करते हैं, मैं वहीं पर उपस्थित रहता हूं।

निर्माण अब ज्यादा दूर नहीं है। देश की जनता जल्द से जल्द मंदिर निर्माण चाहती है। भव्य राम मंदिर का निर्माण, गौ रक्षा और गौरवशाली हिंदू समाज का एकीकरण ही उनका लक्ष्य है। संगठन के पदाधिकारियों का चेहरा बदला है, लेकिन उद्देश्य और एजेंडा आज भी वही है।

बैठक में संतों ने विहिप नेता को आशीर्वाद देते हुए कहा कि संत हमेशा से परिषद के साथ रहे है। राम मंदिर के लिए संत हर कुर्बानी देने को तैयार है। बैठक में आचार्य म0मं0 अवधेशानंद गिरि, म0मं0 कैलाशानंद ब्रह्मचारी, महंत ज्ञान देव, रामाधाराचार्य आदि अखाड़ों के संत शामिल हुए। बैठक में कुछ देर के लिए संतों का आशीर्वाद लेने को कैबिनेट मंत्री मदन कौशिक भी शामिल हुए।

राजराजेश्वराश्रम से लिया आशीर्वाद

देर शाम को कोकजे कनखल स्थित जगदगुरु आश्रम पहुंचे। जहां उन्होंने राजराजेश्वराश्रम से मुलाकात कर आशीर्वाद लिया। आश्रम में स्थानीय कार्यकर्ता परिचय बैठक में कोकजे ने कहा कि किसी भी संगठन के लिए कार्यकर्ता रीढ़ की हड्डी होती है। सेवा, समता, समानता, समरसता, सद्भाव, संस्कार के साथ विधवाओं, बुर्जुगों की सुरक्षा और उनके प्रति सम्मान जैसे अनेक विषयों पर अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है, जिसकी जिम्मेदारी उनकी नई टीम के कंधों पर है।

vikrantveerrss@gmail.com

धर्मनारायण शर्मा

आध्यात्मिक और व्यवहारिक समरसता

कोई प्राचीन राष्ट्र जब प्राचीनता को प्राप्त होता है तो कुछ अच्छी और कुछ विकृत परिपाटियाँ घर कर लेती हैं। विकृत व्यवहार कृतियाँ समाज में दूरियाँ निर्माण करती हैं। इन विकृत परिपाटियों के कारण ही समाज में छोटे–बड़े का भेदभाव यहाँ तक कि छूत अछूत जैसी घिनौनी व्यवहार कृतियाँ चल पड़ती हैं। आज अपने देश भारत में विशेषकर हिन्दू समाज में विषमता का बाजार गरम है।

वैदिक काल में या वेदों में भेद और छूआछूत का वर्णन नहीं है। वेदों में तो सब में एकात्मता का ही भाव हैं सभी मनुष्य विराटपुरुष के ही अंगोपांग कहे गये हैं। उपनिषदों में भी सर्वत्र आत्मा की ही प्रधानता हैं गीता भी समदर्शन का प्रतिपादन कर रही है। यथा–

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।।

जो पुरुष नष्ट होते हुए सब चराचर भूतों में परमेश्वर को नाशरहित और समभाव से स्थित देखता है, वही यथार्थ देखता है। ।। अध्याय 13/27 ।।

समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्।।

क्योंकि जो पुरुष सबमें समभावसे स्थित परमेश्वर को समान देखता हुआ अपने द्वारा अपने को नष्ट नहीं करता, इससे वह परम गति को प्राप्त होता है। अध्याय 13/28।।

विद्याविनयसमन्ने ब्राहणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिनः।।

वे ज्ञानीजन विद्या विनययुक्त ब्रह्मण में तथा गौ, हाथी कुत्ते और चाण्डाल में भी समदर्शी ही होते है।

।। अध्याय 05/18 ।। ।।32।।

सिद्धान्तः शास्त्र में 'आत्मवत सर्वभूतेषु' कहा है। तुलसीदास जी ने भी उपर्युक्त बातों को निम्न प्रकार से व्यक्त किया है–

सीयराम मय सब जगजानि।
करहूँ प्रणाम जोरी जुगपानी।।

शास्त्रों ने इस प्रकार का ज्ञान बार–बार जगाया है फिर भी हिन्दू समाज विकृतियों का शिकार होकर भेददृष्टि वाला बन गया। बुद्धिमान समाज गिरे हुओं को उठाता है परन्तु भटका हुआ समाज भेद द्वारा समाज को दुर्बल बनता है। समय की मांग तो समाज को जोड़ने की है। परन्तु समाज के अग्रगण्य महानुभावों व कुछ कट्टरपंथी सन्तों ने भेद को बढ़ाने का ही कार्य किया है। इस कारण बड़े प्रयत्नों के पश्चात भी समरसता, एकता संभव नहीं हो रही है।

भारत के अनेक सन्तों ने कट्टरवादियों की भेदवृत्ति को नकार कर सर्वत्र समरसता का ही प्रतिपादन कियाहै। सन्त रविदास जी ने तो 'हरि को भजे सो हरि का होही' कहकर सभी

शेष पृष्ठ 24 पर....

महाराणा प्रताप

हल्दीघाटी के रण की जय, राणा प्रताप के प्रण की जय। जय जय भारत माता की जय, मेवाड़ देश कण– कण की जय।

व्यक्तिगत सुख वैभव ठुकरा, राजमहल, दास दासियों को छोड़ा सुरुचिपूर्ण भोजन का परित्याग कर, पराधीनता की बेड़ियों में बंधी भारतमाता को पाशमुक्त करने का व्रत ले घोर निर्जन और हिंसक जीवों से भरपूर वन को निवास बनाने वाले, मिट्टी के पात्र में, कभी कभी तो घास की रोटी तक ग्रहण करने वाले, अपने! जिन्हें देश और धर्म की लड़ाई लड़नी चाहिये वह विदेशी शासक अकबर के चरण चूमने में धन्यता का अनुभव कर रहे हैं, इसकी रंच मात्र भी चिन्ता न करने वाले, साधनों की कमी को शौर्य, संकल्पशक्ति, साधना, ध्येयनिष्ठा और प्रबल देशभक्ति से पूर्ण करने वाले, हल्दीघाटी के समरांगण में चेतक पर सवार हाथ में भाला, ढ़ाल, तलवार भीलों और हुतात्मा राजपूतों की छोटी लेकिन शौर्यवान, संकल्पबद्ध और देवदुर्लभ सेना के साथ देश और धर्मद्रोही मानसिंह के सेनापतित्व वाली अकबर की साधन संपन्न और विशाल सेना के छक्के छुड़ा देने वाले बाप्पा रावल और महाराणा सांगा के वंशज, सिसोदिया कुलभूषण, भारतमाता शौर्यकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप की जयन्ती के पावन पर्व पर सादर नमन, विनम्र श्रद्धांजलि !

हम सब को महाराणा की परम्परा का वाहक बनने और उनके चरण चिह्नों पर चलने की शक्ति रामजी प्रदान करें, यही प्रार्थना प्रभु के श्रीचरणों में।

– अम्बरीष सिंह
ambrishsingvhp@gmail.com

महाराणा प्रताप जयंती

विश्व हिन्दू परिषद बजरंगदल के तत्वावधान में 9 मई को नई सड़क हनुमान भाखरी (राजस्थान) पर महाराणा प्रताप शौर्य जयंती कार्यक्रम भव्य रूप से मनाया गया, जिसमें पुराना शहर, बागर व रातानाडा प्रखण्ड कार्यकर्ता सम्मिलित हुए।

शहर प्रखण्ड संयोजक सुरेन्द्र प्रजापत, रातानाड़ा प्रखण्ड के संयोजक महेश जलवाणीया और बागर प्रखण्ड संयोजक दिव्यांग खीची ने महाराणा प्रताप के चित्र पर माल्यापर्ण किया। प्रान्त संगठन मत्री ईश्वर लाल ने कहा कि महाराणा प्रताप ने मातृभूमि की रक्षा हेतु अपना सर्वत्र बलिदान कर दिया परन्तु मुगलों की अधीनता को स्वाकार नहीं किया। उनके शौर्य के कारण ही मात्र 20,000 मेवाड़ी सेना ने अकबर की 85,000 हजार सेना को लोहे के चने चबवा दिये। आज आवश्यकता इस बात की है कि युवाओं को महाराणा प्रताप के शौर्य से प्रेरणा लेते हुए मातृभूमि की रक्षा हेतु सदैव तत्पर रहना चाहिए। भूपेन्द्र कछवाहा, प्रदीप सोनी, मनीष सोलकी, मुकेश, धीरज प्रजापत, विक्रम, हिमांशु, रोनक, कृष्णा जाजपुरा, देवेन्द्र सेन, सौरभ, प्रियका बाहेती, अर्चना दवे, कर्ण देवडा भी उपस्थित रहे।

hpjodhpurmahanagar@gmail.com

प्रस्तुति : सुमित

पृष्ठ 10 का शेषांश....

नोटिस के अनुसार किशोर नाथ और उनके परिवार के सदस्यों को कहा गया है कि वे न्यायाधिकरण न्यायाधीश के समक्ष पेश होकर साबित करें कि वे भारत के नागरिक हैं। विधायक ने कहा कि वह और उनका परिवार भारत के मूल निवास हैं तथा वह अपनी नागरिकता साबित करने के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाएंगे। सूत्रों ने बताया कि नाथ ने विधानसभाध्यक्ष को इस नोटिस से अवगत करा दिया है।

(पंजाब केसरी, 18 मई)

घर वापिसी

22 मई को रामुनीपल्ली गाँव, सुल्तानाबाद मंडल, करी नगर जिला में आयोजित घरवापसि समारोह में आठ परिवार सनातन धर्म में वापिस आये।

– जी. सत्यम्, विहिप के. सह मंत्री

दानवीरों में श्रेष्ठ भामाशाह

तनसमर्पित, धनसमर्पित और यह जीवन समर्पित चाहता हूँ मातृभू तुझको अभी कुछ और भी दूं।

भामाशाह! यह उस महान व्यक्ति का नाम है जिसके व्यक्तित्व और कृर्त्तृत्व से यह शब्द स्वयं एक महान सम्मान का सूचक बन गया है। वर्तमान में ''भामाशाह सम्मान'' बहुत ही प्रतिष्ठा का सम्मान माना जाता है। राज्य सरकारों के जन उपयोगी कार्यो में जो लोग अपने धन का विसर्जन कर विद्यालय, अस्पताल, धर्मशालाएं आदि स्थापित करने में सहयोग करते है उन्हें ''भामाशाह'' कह कर सम्मानित किया जाता है। तात्पर्य यह है कि महाराणा प्रताप के अनन्य सहयोगी, इतिहास पुरुष भामाशाह का नाम दानवीरों के लिए स्वयं एक सम्मान बन गया है।

के. छगनलाल बोहरा

उज्ज्वल वंश परंपरा

भगवान् महावीर के उत्तरवर्ती एक आचार्य रत्नसूरी के उपदेशों से प्रभावित राजपूताने के अनेक क्षत्रियों ने मांस मदिरा त्याग कर जैन धर्म स्वीकार कर लिया जो ओसवाल कहलायें। इसी ओसवाल वंश के कावड़िया गोत्र में भामाशाह के पिता भारमल का जन्म अलवर में 1501 ई में हुआ। बचपन से ही वे मेधावी सुसंस्कारित कुशल, गुणवान, सुन्दर बालक थे। युवावस्था में अलवर के जाने माने युवकों के रूप में चर्चित हुए।

जब महाराणा सांगा ने रणथंभोर की जागीर अपनी बड़ी रानी हाड़ी कर्मवती के पुत्र विक्रमादित्य और उदयसिंह को दे दी तो रणथंभोर के किलेदार के रूप में कावड़िया भारमल को नियुक्त किया जो उनके लिए एक योग्य सहायक, संरक्षक, कुशल प्रशासक ही नहीं बल्कि ऐसे कूटनीतिज्ञ किलेदार साबित हुए जो कि अपनी सूझबूझ से रणथंभोर को बाबर के हाथ में जाने से बचाने में सफल रहे। रणथंभोर दुर्ग उत्तरपश्चिम भारत का महत्वपूर्ण दुर्ग था। अतः शेरशाह सूरी ने भी इस पर अधिकार करने का बहुत प्रयास किया परन्तु किलेदार भारमल ने अच्छी सूझबूझ और चतुराई से शेरशाह के अधिकार में जाने से रणथंभोर को बचा लिया।

रणथंभोर में रहने तक महारानी कर्मवती और उनके दोनों पुत्रों राजकुमार विक्रमादित्य और उदयसिंह की उन्होंने बहुत हिफाजत की। दोनों ही राजकुमारों की शिक्षा, दीक्षा सैन्य प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की। उनकी इस स्वामिभक्ति से उदयसिंह बचपन से ही प्रभावित थे।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात

भामाशाह का जन्म 28 जून 1548 के दिन रणथंभोर दुर्ग के किलेदार कावड़िया ओसवाल भारमल की पत्नी कर्पूरदेवी की कोख से हुआ। बचपन से ही उन्हें जैन संस्कारों के साथ–साथ शस्त्र विद्या, घुड़सवारी, सैन्य संचालन और राजकाज की शिक्षा अपने माता–पिता से प्राप्त हुई। वीरता, उदारता, देशभक्ति, व स्वामिभक्ति के गुण उनमें अपनी वंश परम्परा से प्राप्त थे जो जीवनपर्यन्त उनके हर कार्य में परिलक्षित होते है।

दासीपुत्र बनवीर को हटाकर उदयसिंह जब मेवाड़ के महाराणा बने तब उन्होंने भारमल को परिवार सहित चितौड़ बुला कर मेवाड़ राज्य का कोषाधिकारी (खजांची) नियुक्त कर दिया और एक लाख की जागीर प्रदान कर अपनी सेवा में रख लिया। इन्हीं वर्षों में भामाशाह और उदयसिंह के ज्येष्ठ पुत्र प्रताप की आपस में मित्रता हो गई जो आजीवन रहीं।भारत की दो महान विभूतियों का यह संयोग भविष्य की महान घटनाओं की पृष्ठभूमि थी।

कुंवर प्रताप के व्यक्तित्व में बचपन से ही सहज मिलनसारिता के गुण विद्यमान थे। वे गुणग्राहक थे, कुंभलगढ़ के अपने प्रारंभिक जीवन तथा चितौड़ में किले के नीचे रहते हुए उन्होंने समाज के सभी वर्ग के लोगों से सहज, सरल, समरस सम्बंध विकसित किये भील जनजाति के लोग उन्हें अपने आत्मीय मान ''कीका'' अर्थात पुत्र के सम्बोधन से पुकारते थे। उस काल में उनका यहीं ''राणा कीका'' सम्बोधन जन साधारण में अधिक प्रचलित रहा युद्ध काल में अकबर भी उन्हें इसी नाम से सम्बोधित करता था।

यह आत्मीयता प्रताप के लिए सदैव विश्वसनीय योग्य और प्राण न्यौछावर करने वाले साथियों को उनके साथ जोड़े रहीं और भामाशाह ताराचंद, राणापूंजा, रामशाह तंवर पुरोहित गोपीनाथ, पुरोहित जगन्नाथ, मेहता रतनचंद, चारण जैसा, पानेरी कल्याण, हकीमखां सूर, आदि विभिन्न जातियों के वीरों को उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर देशरक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने को प्रेरित करती रहीं।

मेवाड़ की आर्थिक उन्नति

भामाशाह के रूप में प्रताप को बहुत ही योग्य विश्वसनीय और कुशल प्रशासक सहयोगी के रूप में प्राप्त हुआ जिन्होनें वंश परम्परा से प्रताप के दादा राणासांगा पिता उदयसिंह और पुत्र अमरसिंह तक पूर्ण स्वामिभक्ति के साथ अपना तन मन धन सर्वस्व देश के लिए समर्पित कर दिया। ईस्वीं 1567 में चितौड़ पर अकबर के आक्रमण के समय भामाशाह के पिता कावडिया भारमलजी ने चितौड़ में ही रहने का निर्णय कर युद्ध करते हुए प्राणोत्सर्ग किये। भामाशाह अपनी माता कर्पूरदेवी और छोटे भाई ताराचन्द सहित युवा प्रताप के सहयोगी के रूप में महाराणा उदयसिंह के साथ उदयपुर के पहाड़ों में गोगुन्दा आ गये जहां फाल्गुन पूर्णिमा होली के दिन सन् 1572 में

उदयसिंह की मृत्यु के बाद प्रताप के राज्याभिषेक होने पर उनके प्रमुख सहयोगी सरदार के रूप में खजांची का कार्यभार संभालने लगे।

अपने वित्तीय कौशल से भामाशाह ने मेवाड़ की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया। अकबर के आक्रमण के कारण चितौड़ में हुए तीसरे जौहर और महाराणा उदयसिंह के उदयपुर के पहाड़ों में आ जाने की वजह से मेवाड़ राज्य की जो आर्थिक वृद्धि बाधित हो गई थी, उसे प्रताप और भामाशाह की कुशल जोड़ी ने पुनः सुदृढ़ता प्रदान कर अकबर के पुनः निकट भविष्य में संभावित आक्रमण के लिए पर्याप्त तैयारी कर ली।

संकट कालखण्ड

16 वीं शताब्दी का वह काल खण्ड भारत में क्षत्रियों के लिए..... समय था। सब प्रकार से समर्थ और शक्तिशाली होते हुए भी वे सब अपने आप में अकेले थे। परस्पर ईर्ष्या से भरे हुए, झूठे अंहकार में डूबे एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए अपनी शक्ति और सामर्थ्य का उपयोग मुस्लिम आंक्राताओं का साम्राज्य भारत में सुदृढ़ करने हेतु कर रहे थे। हिन्दू कुल मर्यादा को त्याग कर अपनी बेटियांम्लेच्छो को प्रदान कर रहे थे। राजा मानसिंह का बाहुबल और रण कौशल काबुल कंधार से लेकर बंगाल असम तक का भारत जीत कर अकबर के चरणों में समर्पित करने में लग रहा था।

राजा टोडरमल और बीरबल का बुद्धिबल और व्यवस्थाकौशल अकबर के उस विशाल साम्राज्य को सुव्यवस्थित करने में लग रहा था। हिन्दू ही दूसरे हिन्दू को दबा कर अकबर का गुलाम बनाने के प्रयास में लगा हुआ था। ऐसे विषम और विपरीत कालखण्ड में भामाशाह जैसे बुद्धिमान, कुशल प्रशासक, और वीर योद्धा ने अपना तन– मन– धन सभी कुछ देशहित में प्रताप पर न्यौछावर कर एक अनुपम उदाहरण विश्व के सामने प्रस्तुत किया। राजा भगवानदास, मानसिंह और मिर्जा खानखाना ने कई तरह के प्रलोभन दिए और कर्मचन्द बछावत आदि– आदि के उदाहरण देकर उन्हें अकबर की सेवा में लाने का प्रयास किया परन्तु उनकी स्वामिभक्ति प्रताप और मेवाड़ के प्रति सदैव पर्वत की तरह अविचलित रहीं। बड़े से बड़ा प्रलोभन भामाशाह को अपने देश के प्रति निष्ठा से डिगा न सका।

हल्दीघाटी युद्ध और भामाशाह

18 जून 1576 हल्दीघाटी में एक हिन्दू क्षत्रिय मानसिंह अपनी और अपने फूफा म्लेच्छ अकबर की सारी सैनिक शक्ति लेकर अपने पिता और पूर्वजों के स्वामी रहे। मेवाड़ राजवंश के उत्तराधिकारी हिन्दू कुल गौरव महाराणा प्रताप को पकड़ कर अकबर का गुलाम बनाने आ खड़ा हुआ था।

दूसरी ओर दोनों भाई भामाशाह और ताराचंद हिन्दुआ सूर्य प्रताप के सहयोगी और देशप्रेम स्वातंत्र्य भावना के सजग प्रहरी की तरह खड़गहस्त होकर महाराणा के पीछे खड़े थे। दोनों भाईयों ने जम कर तलवार के जौहर दिखाए, साक्षात काल बन कर मुगल सेना पर टूट पड़े। पहले ही हमले में मुगल सेना तीतर बितर होकर भेड़ों की तरह बनास नदी के पार भाग खड़ी हुई। मेवाड़ी सेना के दायें हरावल के हमले से मुगल सेना का बांया हरावल तहस– नहस होकर भाग खड़ा हुआ।

रक्ततलाई के घनघोर युद्ध में प्रताप का स्वामिभक्त घोड़ा चेतक मानसिंह के हाथी के मस्तक पर चढ़ दौड़ा प्रताप ने भाले का भरपूर वार मानसिंह पर किया और उसे मरा हुआ जान कर, युद्ध का मुख्य लक्ष्य मानसिंह को मारना प्राप्त कर लिया है, ऐसा मान कर युद्ध को पहाड़ी घाटियों में ले जाने की युद्ध नीति के तहत पहाड़ों की तरफ निकल गये। प्रताप की स्पष्ट विजय के स्थान पर दैवीय कारणों से अकबर की जीत लिखने वाले तथाकथित इतिहासकार इतिहास का सबसे बड़ा झूठ लिखते हैं। सारा युद्ध प्रताप भामाशाह आदि सरदारों की योजनानुसार चला। युद्ध का मुख्य लक्ष्य क्षत्रिय मर्यादा भंग करने वाले मानसिंह को दण्ड देना, मुगलसेना को भयभीत कर युद्ध को पहाड़ी घाटियों में ले जाकर छापामार युद्ध तकनीक से बलवान शत्रु को परास्त करना था और इसी योजनानुसार सारा युद्ध चला। अकबर की विजय बताना उसके चाटुकारों द्वारा उसकी नाक बचाना मात्र है। वरना स्वयं अकबर ने भी हल्दीघाटी में मानसिंह की जीत के समाचार को स्वीकार ही नहीं किया।

(क्रमशः)

१८ साल बाद अचानक पानी से बाहर आया बना बनाया प्राचीन शिव मंदिर

नर्मदा नदी गुजरात की जीवन रेखा है। भीषण गर्मी के कारण इसका पानी सूखने लगा है। दिनों–दिन इसका जलस्तर कम हो रहा है। इससे सरकार ही नहीं आम आदमी भी चिंतित है। ऐसे में ऐतिहासिक शिवमंदिर अब दिखाई देने लगा है। इससे शिवभक्तों में अपार खुशी है। लोग दूर–दूर से यहां दर्शन के लिए आने लगे हैं।

नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर डेम बनने के बाद कवांट तहसील में स्थित हांफेश्वर मंदिर पूरी तरह से डूब गया था। अब 18 साल बाद यह मंदिर फिर दिखाई देने लगा है।नर्मदा माता के बारे में कहा जाता है कि उसके पेट में जितने भी कंकड़ हैं, वे सभी शंकर हैं। जितने गांवों से वह गुजरती है, वह सभी तीर्थ स्थल।

तीर्थों की हारमाला वाले पवित्र रेवा तट पर गुजरात का पहला तीर्थ किसे माना जाए, यह सवाल मन में सहजता के साथ ही उठता है। इसका जवाब यही है कि छोटा उदेपुर जिले के कवांट तहसील का हांफेश्वर। गुजरात, महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित यह स्थान नर्मदा की परिक्रमा करने वालों के लिए विश्रामस्थली है।

हांफेश्वर इस गांव का नाम है, जहां शिवालय में कलहंसेश्वर महादेव विराजमान हैं। कहा जाता है कि ऋषि मार्कंडेय ने यहां कलहंसशेश्वर के रूप में शिव की प्राकट्य कथा युधिष्ठिर को सुनाई थी।

इस कथा के अनुसार जगत का यदि वैभव चाहिए, तो तुरंत ही मिल जाएगा, किंतु उस महातपस्वी ने केवल शंकर भगवान के दर्शन की इच्छा व्यक्त की। आखिर में देवराज के आशीर्वाद से महादेव ने कलहंस को दर्शन दिया। ऋषि ने शंकर भगवान के सामने यह इच्छा व्यक्त की कि आपके भक्तों को यहां सदैव आपकी अनुभूति हो।

इसके चलते कलहंसशेश्वर शिव का यह धाम अस्तित्व में आया। यह धारणा है कि यहां पूजन–अर्चन, दान, होम–हवन करने वालों की मनोकामना पूर्ण होती है।

(पंजाब केसरी, 5 मई)

पृष्ठ 20 का शेषांश....

भक्तों को चाहे वह किसी भी बिरादरी का क्यों न हो उसे हरि का ही माना है। कुछ सन्तों ने तो कहा कि 'जाति न पूछो साधू की, पूछ लीजिये ज्ञान यह कहकर जाति वर्ण को नकार दिया हैं गुरु नानकदेव ने कहा कि ''गुरु कृपाजिण नर पर किन्ही, तिन्ही जुगति पिछाणी'' चाहे व किसी भी वर्ण का क्यों न हो 'नानक लीन भये गोविन्द में जों पानी संग पानी'।

भगवान श्रीराम ने जटायू का अन्तिम संस्कार किया। वानर अर्थात् वनमें रहने वाले नर अर्थात् जनजाति बन्धुओं को श्रीराम ने गले लगाया। शबरी के बेर खाये, एक प्रकार से भगवान श्रीराम ने सबमें अपना रूप दर्शन कर सभी को प्रेम व सम्मान दिया था। जब अवतारी श्रीराम ऐसा उदार एवं प्रेम व सम्मान पूर्ण व्यवहार करते रहे तो आज के आचार्य शास्त्रों के नाम पर भारत की एकता समरसता में भेद क्यों चाहते हैं?

आज के स्वार्थी विघटन वादी, जातिवादी व श्रेष्ठता का दम्भ धारण करने वाले आँख खोलकर देख लें। यह काल इतना शक्तिवान है कि जो कोई भी इसके मार्ग में रोड़ा बनने का प्रयत्न करेगा, वे पेड़ के पत्तों की तरह उड़ जायेंगे। समरसता यह इस देश की अनिवार्यता है, जैसे पृथ्वी घुमती है, गृहमण्डल भी भगवत् योजना से संचरित हो रहे हैं। वैसे ही सामाजिक समरसता का प्रवाह भी तेजी के साथ चल रहा है। इसे अब राजनेता व कट्टरवादी नहीं रोक सकेंगे। काल एकता, एकात्मता, समरसता निर्माण करके ही मानेगा। समय की मांग है कि सम्पूर्ण समाज अपने पिछड़े दलित बन्धुओं को गले लगावे और सब प्रकार का सम्मान देवें। उनकी बस्ती में जावें उनके कष्टों को ध्यान में रखकर उन्हें दूर करने का प्रयास करें। कई बार उनकी बस्ती में पण्डित कर्मकाण्ड करने के लिये नहीं जाते है हमारा धर्म है कि हम यह प्रबन्ध भी करें। बस्ती में सड़क, पानी का प्रबन्ध ठीक नहीं है तो सम्बन्धित विभाग से मिलकर सुविधा निर्माण करना चाहिए। कार्यक्रमों में भी सम्मानित स्थान दलितों को देने में पहल करने की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार के संगठनों में भी इन्हें उचित स्थान देने का स्वभाव बनना चाहिए। दलितों की बस्तियों में संस्कार केन्द्र, सिलाई बुनाई केन्द्र आरम्भ करें और हो सके तो विद्यालय, छात्रावास, कम्प्यूटर प्रशिक्षणकेन्दों का संचालन कर उनकी नव पीढ़ी को सक्षम बनाने का कर्तव्य समाज पूर्ण करें क्योंकि हम सभी एक माँ की सन्तान है उस माँ का नाम है भारत माता। इसी बात को ध्यान में रखकर विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित धर्म संसद में सन्तों ने घोषणा की थी–

हिन्दवः सोदरा सर्वे, न हिन्दू पतितो भवेत।
मम दीक्षा हिन्दू रक्षा, मम मंत्र समानता।।

हिन्दू–हिन्दू भाई–भाई हैं, कोई हिन्दू पतित नहीं है। रामनाम तो पतित को पावन करता है इसके अलावा भारत में गंगा, यमुना के समान अनेक पावन नदिया बह रही है। गंगा के नामोच्चार से पापो का क्षय हो जाता है ऐसी पावन भारत की भूमि में कोई पतित हो नहीं सकता। इसलिये अब सर्वत्र एकता का, समानता का नाद गुंजायमान हो ओर राष्ट्रीय एकता को सशक्त किया जाय। दलित समाज टुच्चे राजनेताओं का साथ छोड़कर देशभक्ति का बाना धारण करें और अपने भारत को शीघ्रातिशीघ्र जगद्गुरु बनावें।

jansewa@gmail.com

राजस्थान सरकार ने पाक विस्थापितों के लिए बनाई नीति

जयपुर, जोधपुर और अजमेर सहित ३१ जिलों में अब पाकिस्तान से आए सभी हिंदू परिवारों को १०० वर्गमीटर तक के भूखंड ५०: तक की रियायती दरों पर आवंटित किए जाएंगे! सरकार ने पहली बार इनके लिए जमीन आवंटन की नीति बनाकर आदेश जारी किए हैं। अब पाकिस्तान से आया हिंदू परिवार २ साल या अधिक समय से राजस्थान में निवास कर रहा है तो वह रियायती भूखंड का हकदार होगा। किंतु उसके पास संबंधित जिले के कलेक्टर का भारत की नागरिकता का प्रमाणपत्र व निवास का एक दस्तावेज आवश्यक होगा। ऐसे परिवारों को १५ से २० दिन में नगरीय निकायोंद्वारा भूखंड आवंटन की प्रक्रिया पूरी करनी होगी।

राशि जमा नहीं कराई तो भूखंड रद्द कर दिया जाएगा

आवंटन के एक साल तक यदि आवंटी ने नगरीय निकाय में राशि जमा नहीं कराई तो भूखंड स्वतः निरस्त कर दिया जाएगा। नगरीय विकास विभाग ने मुख्यमंत्री के अनुमोदन के बाद पाक विस्थापितों के लिए शहरी आवास नीति जारी की। इसमें प्राधिकरण क्षेत्र, हाउसिंग बोर्ड और यूआईटी वाले शहर शामिल किए गए हैं। प्रदेश में ३ प्राधिकरण, ३१ शहरों में हाउसिंग बोर्ड और १५ में यूआईटी है। कई शहरों में हाउसिंग बोर्ड व यूआईटी साथ भी हैं !

मुखिया के नाम ही देंगे भूखंड, बालिग बेटे-बेटी के लिए अलग भूखंड भी

नीति में प्रावधान किया है कि पाक विस्थापित के राशनकार्ड या अन्य दस्तावेज में दर्शाए मुखिया के नाम ही भूखंड का आवंटन किया जाएगा। लेकिन किसी भी परिवार के पुत्र या पुत्री बालिग है तो उनको भिन्न परिवार का सदस्य मानकर भूखंड आवंटित किए जा सकेंगे।

अधिकतम 100 वर्ग मी. तक का भूखंड मिलेगा

पाक विस्थापित परिवार को सामान्यतया ६० वर्गमीटर तक का आवास आवंटन का प्रावधान किया है। लेकिन अधिकतम सीमा १०० वर्गमीटर रखी है। ६० वर्गमीटर तक के भूखंड की कीमत आवासीय आरक्षित दर की २५ फीसदी रहेगी। ६१ से ६० वर्गमीटर तक के भूखंड की कीमत आवासीय आरक्षित दर की ५० फीसदी रहेगी। भूखंड के आवंटन की लीज आवंटन की राशि के २.५ प्रतिशत की दर से कब्जा देने की तिथि से ली हर साल जाएगी। इसके अलावा एकमुश्त आठ साल की लीज जमा कराने पर लीज रेंट से मुक्त कर दिया जाएगा ! (राज लाईव, 19 मई)

रमजान के दौरान नौचंदी मेले में नहीं होगा सांस्कृतिक कार्यक्रम

मेरठ (उत्तर प्रदेश) : नौचंदी मेले में सांसतिक कार्यक्रम रमजान के लिए नहीं होंगे। नौचंदी मेला परिसर में प्रतिदिन होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर रोक लगा दी गई है। मेरठ की मेयर सुनीता वर्मा ने इस बाबत आदेश जारी कर दिया है। मुस्लिमों की इबादत के विशेष माह रमजान की वजह से नौंचदी मेला परिसर स्थित पटेल मंडप के कार्यक्रम नहीं किए जाने का आदेश महापौर ने दिया है।

नौचंदी मेला के उपलक्ष्य में पटेल मंडप में परंपरानुसार प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रम हो रहे थे। इसमें मुशायरा, कवि सम्मेलन, हास्य कवि सम्मेलन, म्यूजिक व गीत संध्या, बच्चों के कार्यक्रम व जादू आदि के जरिए लोगों का मनोरंजन किया जाता है। अलग-अलग आयोजनों की तिथि निर्धारित की गई थी, जिसके अनुसार यहां १६ मई तक कार्यक्रम होने थे। मगर ये कार्यक्रम अब रमजान की वजह से बंद कर दिए गए हैं। (न्यूज18, 19 मई)

दलित लड़की से दुष्कर्म कर धर्म-परिवर्तन का बनाया दबाव?

मेवात में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है। खबर के अनुसार, मूलरूप से राजस्थान के डीग का रहने वाला एक दलित परिवार फिलहाल फरीदाबाद में रह रहा था। इसी परिवार की किशोरी के साथ यह घटना घटी। किशोरी का पिता एक मजदूर है। बताया जा रहा है कि कुछ दिन पहले किशोरी की मां ने पानी ना भरने को लेकर किशोरी को पीट दिया। जिससे नाराज होकर किशोरी बीते 4 अप्रैल को अपने घर से लापता हो गई। किशोरी के

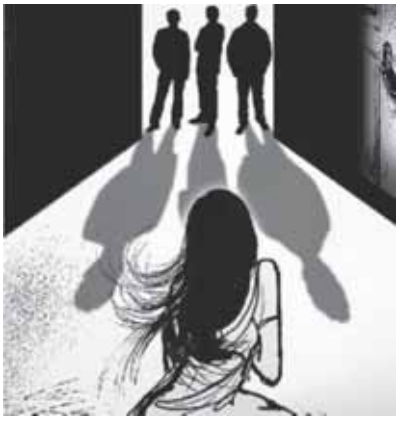

परिजनों ने गुमशुदगी की रिपोर्ट भी दर्ज करायी, लेकिन उसका कुछ पता नहीं चल सका। इस बीच किशोरी अपने घर से भागकर ट्रेन में बैठकर उत्तर प्रदेश के कोसी कलां रेलवे स्टेशन पहुंच गई,

शेष पृष्ठ 26 पर...

2019 के शाही स्नान तिथियों की घोषणा

इलाहाबाद। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अखाड़ा परिषद के पदाधिकारियों की उपस्थिति में कुंभ–2019 के शाही स्नान की तिथियों की घोषणा की। योगी ने सर्किट हाउस में संवाददाताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अखाड़ा परिषद के सभी 13 अखाड़ों के पदाधिकारियों की उपस्थिति में प्रयाग में अगले वर्ष लगने जा रहे कुंभ के शाही स्नान की तिथियों की घोषणा करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है।

उन्होंने कहा कि प्रथम शाही स्नान 15 जनवरी 2019 को मकर संक्रांति के दिन, दूसरा शाही स्नान 4 फरवरी, 2019 को मौनी अमावस्या के दिन और तीसरा शाही स्नान 10 फरवरी, 2019 को बसंत पंचमी के दिन होगा। प्रयागराज में कुंभ का आयोजन देश दुनिया का सबसे बड़ा आध्यात्मिक एवं धार्मिक आयोजन है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारा अनुमान है कि इस कुंभ में 12 से 15 करोड़ श्रद्धालु पूज्य संतों के सान्निध्य में स्नान करने और कुंभ का आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त करने आएंगे। यह हम सभी और खासतौर पर उत्तर प्रदेश वासियों के लिए महत्वपूर्ण अवसर है कि वे देश दुनिया से आने वाले श्रद्धालुओं को आतिथ्य प्रदान कर स्वयं को धन्य महसूस कर सकें। गौरतलब है कि शाही स्नान वे स्नान हैं जिसमें 13 अखाड़ों के सभी नागा सन्यासी, महामंडलेश्वर और अन्य साधु संत पेशवाई निकालकर सबसे पहले स्नान करते हैं। बैठक के बाद अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरि ने कहा कि जबसे भारत आजाद हुआ है, पहली बार शाही स्नान की घोषणा में मुख्यमंत्री उपस्थित हुए और स्वयं शाही स्नान की तिथियों की घोषणा की।

बैठक से पहले मुख्यमंत्री ने नगर में कुंभ की तैयारियों का जायजा लिया और मठ बाघंबरी गद्दी में साधु संतो के साथ दोपहर का भोजन किया।

(वेब दुनिया, 19 मई)

तिरुपति बालाजी मंदिर में 100 करोड़ घोटाले का आरोप

दुनिया के सबसे धनी मंदिरों में से एक तिरुपति बालाजी मंदिर में 100 करोड़ रुपए का घोटाला करने का मामला सामने आया है। यह खुलासा खुद मंदिर के मुख्य पुजारी रमन्ना दीक्षितुलू ने किया है। पुजारी के अनुसार आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू मंदिर के पैसों का दुरूपयोग करते हैं। हालांकि इस खुलासे के बाद पुजारी को हटा दिया गया।

रमन्ना दीक्षितुलु ने आरोप लगाया था कि तिरुपति मंदिर प्रशासन मंदिर में चढ़ावे का दुरुपयोग कर रहा है। उन्होंने कहा कि आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री ही मंदिर के प्रशासकों को नियुक्त करते हैं इसलिए यहां वे मनमानी करते हैं। पुजारी के अनुसार मन्दिर के रसोईघर जहां वर्षों से प्रसाद बन रहा था उसे तुड़वाकर करोड़ों के प्राचीन आभूषण और जेवर–जवाहरात गायब कर दिये गये। उन्होंने आरोप लगाया कि नायडू ने मन्दिर की सौ करोड़ की राशि अपने राजनीतिक खर्चों के लिए इस्तेमाल कर दी। रमन्ना ने बताया कि भक्तों द्वारा भगवान को चढ़ाए गए कई पुराने आभूषणों का भी कुछ अता–पता नहीं है।

वहीं पुजारी के इस खुलासे के बार राजनीति भी गरमा गई। आंध्र प्रदेश विधानसभा में विपक्ष के नेता जगमोहन रेड्डी ने कहा कि यह सब पैसे और ताकत के लिए सीएम की भूख को दर्शाता है। बता दें कि तिरुपति मंदिर दुनिया का दूसरा सबसे धनी मंदिर है। उसकी संपत्ति 50,000 करोड़ है और सालाना आय करीब 650 करोड़ रुपये है। तिरुपति बोर्ड नई दिल्ली, ऋषिकेश, गुवाहाटी, मुंबई, चेन्नई, हैदराबाद और कन्याकुमारी समेत कई शहरों और कस्बों में मंदिरों का संचालन करता है।

(पंजाब केसरी, 22 मई)

पृष्ठ 25 का शेषांश...

जहां उसकी मुलाकात मेवात के पुन्हाना खंड के गांव सिंगार निवासी फरजाना से हुई। फरजाना भोपाल स्थित अपने मायके जाने के लिए कोसी रेलवे स्टेशन पर ट्रेन का इंतजार कर रही थी। कहा जा रहा है कि फरजाना, किशोरी को लेकर भोपाल आ गई और फिर बाद में किशोरी को लेकर अपने घर सिंगार लौट आयी।

फरजाना ने दलित किशोरी का नाम बदलकर मुस्लिम नाम दे दिया और उसका धर्म परिवर्तन भी करा दिया। किशोरी का आरोप है कि महिला ने उसे गोमांस भी खिलाया और नमाज पढ़ने पर जोर दिया, बाद में उसे 40 हजार रूपये में इस्लाम (70 वर्षीय) नामक व्यक्ति को बेचने की कोशिश की। इसी बीच फरजाना के देवर ताहिन ने किशोरी के साथ बलात्कार करने की भी कोशिश की। जिस पर फरजाना और ताहिर के बीच झगड़ा हो गया और मामला पुलिस थाने पहुंच गया। इस पर जब पुलिस ने किशोरी से पूछताछ की तो पुलिस को शक हुआ, जब पुलिस ने सख्ती से पूछताछ की तो किशोरी ने पुलिस को सब कुछ बता दिया। पुलिस ने फिर किशोरी के मां–बाप को सूचित किया और आरोपी फरजाना, इस्लाम, ताहिर को गिरफ्तार कर लिया है।

(जनसत्ता आनलाइन, 16 मई)

विहिप अध्यक्ष ने लिया संतों का आशीर्वाद

विहिप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष कोकजे जी का जोरदार स्वागत

विहिप महामंत्री मिलिंद परांडे का नागरिक अभिनन्दन समारोह

110 बजरंगियों ने ली त्रिशूल दीक्षा

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/2018-20
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि : 28.05.18
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

मौसमी बीमारियों से बचाव

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

लू से सावधानी बचाये सबकी जान

- धूप में खाली पेट न निकलें।
- खूब पानी पियें।
- सूती, ढीले कपड़े पहनें।
- धूप में सिर ढँक कर रखें।

साफ पानी पियें, स्वस्थ रहें

- अशुद्ध और दूषित पेयजल के सेवन से उल्टी दस्त, पेचिश, हैजा, पीलिया और टाइफाइड जैसी बीमारियों का खतरा हो सकता है।
- साफ और शुद्ध पानी का उपयोग करें।
- ताजे बने भोजन और खाद्य वस्तुओं का सेवन करें।
- गंदे, सड़े–गले हुए फलों भोजन और खुले हुए खाद्य पदार्थों का सेवन न करें।
- खाने के पहले और शौच के बाद साबुन से हाथ अवश्य धोयें।

दस्त से बचाव

- बच्चों में संक्रमण के कारण दस्त रोग हो सकता है। सही समय पर इसकी पहचान एवं उपचार कर इस जानलेवा रोग से बच्चों को बचाया जा सकता है।
- दस्त के दौरान बच्चे को ओ.आर.एस. का घोल पिलायें।
- दस्त आरम्भ होने से 14 दिन तक बच्चे को प्रतिदिन एक जिंक की गोली खिलायें।
- दस्त के दौरान बच्चे को सामान्य भोजन देते रहें। यदि बच्चा छोटा है तो उसे माँ का दूध लगातार पिलाते रहें।
- दस्त नियंत्रित न होने की स्थिति में तुरन्त नजदीकी स्वास्थ्य केन्द्र में सम्पर्क करें।

अधिक जानकारी के लिये अपने नजदीकी सरकारी अस्पताल से सम्पर्क करें।

D17002

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.–9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज